पी.एस.बी.
राजभाषा
अंकुर
मार्च, 2014
੧ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹਿ ॥
पंजाब एण्ड सिंध बैंक
ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ
Punjab & Sind Bank
(राजभाषा विभाग)

सुस्वागतम्

श्री जतिन्दरबीर सिंह, आई.ए.एस.

हमारे नए

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

श्री जतिन्दरबीर सिंह, आई.ए.एस., ने बैंक के नए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के रूप में पदभार ग्रहण किया। बैंक में उनके शुभागमन पर स्वागत करते हुए कार्यकारी निदेशक श्री मुकेश कुमार जैन व श्री किशोर कुमार साँसी।

श्री जतिन्दरबीर सिंह, आई.ए.एस., का स्वागत करते हुए श्री जी. एस. सचदेवा, मुख्य महाप्रबंधक, श्री हर्षबीर सिंह, महाप्रबंधक एवं श्री जी. एस. सेठी, फील्ड महाप्रबंधक।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

'बैंक हाऊस', प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस,
नई दिल्ली-110 008

मुख्य संरक्षक

श्री जतिन्दरबीर सिंह, आई.ए.एस.
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक

श्री एम. के. जैन एवं श्री के. के. साँसी
कार्यकारी निदेशक

मुख्य संपादक

श्री आर. सी. नारायण
महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक व प्रकाशक

डॉ. चरनजीत सिंह
मुख्य प्रबंधक
प्रभारी राजभाषा

संपादक मंडल

श्री कुलदीप सिंह खुराना
वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा

श्री त्रिलोचन सिंह
प्रबंधक

डॉ. नीरू पाठक, श्री सोनी कुमार
राजभाषा अधिकारी

पंजीकरण सं. : एफ. 2(25) प्रैस. 91

'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

मुद्रक : मोहन प्रिंटिंग प्रेस
5/35ए, कीर्ति नगर औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110015 फोन : 98100 87743

मार्च 2014

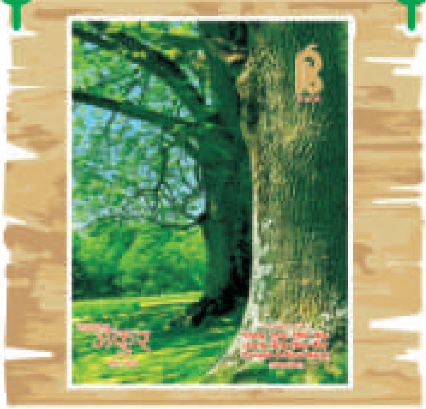

विषय-सूची

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ
1.	संपादक मंडल / विषय-सूची	1
2.	अ. एवं प्र. नि. का संदेश	2
3.	संपादकीय	3
4.	अ. एवं प्र. नि. का किसान मेले में अभिनंदन	4
5.	अ. एवं प्र. नि. का करनाल आगमन पर अभिनंदन	5
6.	राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3)	6
7.	चैतन्य महाप्रभु	9
8.	ऐसा विचार जो मुझे पहले आना चाहिए था	10
9.	स्मृतिशेष : फणीश्वरनाथ रेणु एवम् लतिका रेणु	11
10.	चंडीगढ़ बैंक नराकास	13
11.	मेरी पुदुचेरी यात्रा	14
12.	हिंदी की लोकप्रियता में उसके वैश्विक रूप का योगदान	16
13.	समय का सदुपयोग	17
14.	अंकुर विमोचन	18
15.	कार्यकारी निदेशक महोदय का अं.का. कोलकाता का दौरा	19
16.	पी.एस.बी. ग्रामीण स्वः - रोज़गार प्रशिक्षण संस्थान	20
17.	18वां अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन	22
18.	दिल्ली बैंक नराकास	24
19.	जन्म-दिन की घंटी	26
20.	माँ	28
21.	गतिविधियाँ	30
22.	अधूरा मन	31
23.	अं.का. जालंधर/शाखा पानीपत नराकास	33
24.	हिंदी कार्यशालाएँ	34
25.	मासूम चेहरा	37
26.	साध-संगत की मर्यादा	38
27.	काव्य-मंजूषा	40
28.	नन्हें चित्रकार	42
29.	हमारे चित्रकार	43
30.	साथी जो हमसे बिछुड़ गए	44

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
का संदेश

प्रिय पाठको,

बैंक द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका 'पी.एस.बी. राजभाषा अंकुर' के माध्यम से आपसे अपने विचार साझा करने का मौक़ा पाकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका किसी भी संस्थान का आईना होती है। जिससे उसकी प्रत्येक गतिविधि का अनुमान लगाया जा सकता है। पिछले कई अंकों के अवलोकन के पश्चात् मुझे यह आभास हुआ कि हमारे बैंक के कार्मिक अपनी भाषा के प्रति अत्यंत जागरुक हैं और उन्हें अपने विचारों व अनुभवों को इस पत्रिका के माध्यम से साझा करने का उचित अवसर मिल रहा है।

बैंकिंग को पूर्णतया हिंदी में किए जाने के लिए भारत सरकार भरसक प्रयास कर रही है। विभिन्न बैंकों के राजभाषा विभाग भी इसमें अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। हमारे बैंक का राजभाषा विभाग इस दिशा में काफ़ी सक्रिय है जो बैंक कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने के लिए निरंतर प्रोत्साहित कर रहा है और बैंक में हिंदीमय वातावरण के सृजन के लिए कार्यरत है, लेकिन इसके लिए बैंक कार्मिकों के सहयोग की भी उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि राजभाषा विभाग के प्रयासों की। आज ग्राहकों को बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने में अंग्रेज़ी का उपयोग बृहत रूप से किया जा रहा है, परंतु आज के प्रतिस्पर्धात्मक दौर में ग्राहक-सेवा की उपयोगिता को समझते हुए बैंक के समग्र विकास के लिए राजभाषा का विकास किया जाना नितांत आवश्यक है। इसलिए बेहतर होगा कि बैंक कार्मिक अपनी डैस्क से, अपना कार्य, अपने मन से, अपनी भाषा में करें ताकि देश और समाज का हर वर्ग बैंकिंग को जाने और बैंकिंग का लाभ ले सके।

आज जब पूरा बैंकिंग क्षेत्र नई चुनौतियों का सामना कर रहा है तथा बैंकों के बीच प्रतिस्पर्धा चरम पर है ऐसे समय में बैंक को नई दिशा देने की जिम्मेदारी मुझे सौंपी गई है। दूसरा मुख्य बिंदु यह है कि सेवा-निवृत्तियाँ भी बड़ी संख्या में हो रही है।। ऐसे में एक ओर प्रतियोगी वातावरण तथा दूसरी ओर अनुभवी साथियों की सेवा-निवृत्तियाँ एक बड़ी चुनौती है। जो भी हो, जीवन एक संघर्ष है और इसमें चुनौतियों का आना स्वाभाविक है। इन चुनौतियों का डटकर सामना करना ही मानव धर्म है और इस मानव धर्म को अच्छे से निभाया जाए, यही हमारा कर्तव्य है। राजभाषा में कार्य करना न केवल हमारा संवैधानिक कर्त्तव्य है बल्कि हमारी अस्मिता की पहचान भी है। इस उदात्त कार्य में राजभाषा का प्रयोग बैंकिंग को और ज़्यादा लाभान्वित कर सकता है। अतः मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास भी है कि हम सब मिलकर राजभाषा में बैंकिंग करते हुए अपनी सत्यनिष्ठा, कर्मठता और अटूट लगन से अपने बैंक को ऊँचाईयों के शिखर तक ले जाने में सफल होंगे।

आपका,

(जतिंदरबीर सिंह) *आई.ए.एस.*

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संपादकीय

सुधी पाठकों,

भाषा मानव जीवन की आधारशिला है जिस पर मानव-व्यवहार तथा उसकी क्रियाएँ आधारित हैं। भाषा ही वह माध्यम है जिससे मानव अपने खुशी और गम, उत्कंठा, उत्साह एवं आश्चर्य आदि भावनाएँ दूसरों को बता सकता है। सोचिए, यदि भाषा न हो तो ......? शायद आप समझ चुके हैं कि भाषा के बिना मानव जीवन कैसा होता? जी हाँ, इसके बिना मानव जीवन ही नहीं अपितु समूचा जगत् शून्य हो जाता। अब तनिक सोचें, कि यदि किसी व्यक्ति से उसकी मातृभाषा की बजाय किसी दूसरी भाषा में, जो उसके लिए सुबोध न हो, उससे विचार-विमर्श किया जाए तो क्या वह अपने भावों या विचारों को पूरी तरह आपके सामने प्रकट करने में समर्थ होगा? नहीं न! ऐसी ही कुछ दशा हमारे भारतवासियों की है। हमारे देश की कुल आबादी का लगभग 60 प्रतिशत अभी भी गाँव में निवास करती है और इस आबादी की मातृभाषा या मूल भाषा या तो हिंदी है या फिर उनकी अपनी कोई क्षेत्रीय भाषा। जैसे-महाराष्ट्र की मराठी, तमिलनाडु की तमिल, उड़ीसा की उड़िया आदि। लेकिन फिर भी देश में अनेक राज्यों में अनेक कार्यालयी कार्य अंग्रेजी भाषा में किए जाते हैं। जो कई बार तो संबंधित व्यक्ति, ख़ास तौर पर ग्रामीणों की समझ से बिल्कुल परे होते हैं। विपणन में भाषा का काफ़ी महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान में बहुत सी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने विपणन को बढ़ाने में इस भाषिक सूत्र का इस्तेमाल कर रही है। 'पेप्सिको' कंपनी के 'ये दिल मांगे मोर' इस वाक्य में मोर शब्द अंग्रेज़ी का है लेकिन हिंदी के साथ इसका प्रयोग होने से यह ग्राहकों की आम भाषा का शब्द बन गया है। इसी तरह आजकल ऑटोमोबाईल क्षेत्र में जापान की 'होंडा' कंपनी का यह हिंदी वाक्य 'सपने सच कर देंगे' कंपनी के दोपहिया वाहनों के विज्ञापन में बोलते हुए सुना व देखा जा सकता है। अभिप्राय यह है कि विपणन में ग्राहकों की भाषा प्रयोग से प्रभावी विपणन किया जा सकता है। हिंदी के साथ ही क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग भी इसमें लाभकारी हो सकता है। दरअसल, विपणन में अंग्रेजी या किसी विदेशी भाषा के प्रयोग से ग्राहकों के लिए उत्पादों की जानकारी लेना क्लिष्ट हो जाता है तथा उन्हें अपनेपन की कमी भी खलती है, जिससे ग्राहकों का विश्वास पाना मुश्किल होता है वहीं अगर इसके लिए अपनी भाषा या किसी क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग किया जाए तो ग्राहक स्वतः ही इस ओर आकर्षित होते हैं। यही भाषा का व्यापारिक महत्व है।

पत्रिका के इस अंक में हमने बैंकिंग से जुड़े अपने सेवा-निवृत्त साथियों के अनुभवों को आपसे साझा किया है। ऐसा विचार जो.., मेरी पुदुचेरी यात्रा, माँ, अधूरा मन जैसी रचनाओं में आप भावों के झरने तले अपनों से एक अटूट लगाव महसूस करेंगे। जन्म दिन की घंटी नामक कहानी स्कूली बच्चों के प्रति रूखे स्वभाव वाले अध्यापकों पर करारा व्यंग्य है। किसान मेला, उच्चाधिकारियों द्वारा बैंक के करनाल एवं कोलकाता आंचलिक कार्यालयों का दौरा, ग्रामीणों को रोज़गार मुहैया कराने के उद्देश्य से बैंक के 'ग्रामीण स्वः-रोज़गार प्रशिक्षण संस्थान' द्वारा आयोजित कार्यक्रम और गतिविधियों के माध्यम से बैंक की विभिन्न गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया है। बैंकिंग क्षेत्र में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियाँ जैसे कि नराकास चंडीगढ़, बैंक नराकास, दिल्ली, राजभाषा सम्मेलन, पत्रिका विमोचन, राजभाषा समाचार, विभिन्न आंचलिक कार्यालयों में राजभाषा अधिकारियों द्वारा आयोजित की गई हिंदी कार्यशालाओं के माध्यम से दर्शाया गया है। बैंक कार्मिकों के नन्हें कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए उनके चित्रों आदि को 'नन्हे चित्रकार' नाम से एक पृष्ठ में प्रकाशित किया गया है। पत्रिका में संकलित ये सभी रचनाएं अधिकांशतः बैंक कार्मिकों की ही हैं ताकि उन्हें राजभाषा हिंदी में कार्य करने के प्रति जागरुक व प्रोत्साहित किया जा सके। जिसके सकारात्मक परिणाम भी मिल रहे हैं। ये सिलसिला जारी रहा तो मंजिल अवश्यंभावी मिलेगी। अंत में आप सभी पाठकों से राजभाषा हिंदी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण व सहयोग चाहूँगा।

आपका,

(आर. सी. नारायण)

महाप्रबंधक (राजभाषा)

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

श्री जतिंदरबीर सिंह, आई.ए.एस.

का 'पंजाब कृषि प्रगति सम्मेलन' में अभिनंदन।

पी.एच.डी. चैम्बर ऑफ कॉमर्स के साथ मिलकर पंजाब सरकार द्वारा इस सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अ. एवं प्र.नि. महोदय ने किसानों को कृषि विकास हेतु कृषि ऋण की जानकारी दी।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

श्री जतिंदरबीर सिंह, आई.ए.एस.

का आंचलिक कार्यालय हरियाणा में आगमन पर अभिनंदन

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3)

दर्शन सिंह जग्गी

कहा जाता है कि पूरी तरह स्वाधीन देश के चार महत्वपूर्ण लक्षण होते हैं - अपना संविधान, अपना राष्ट्रीय ध्वज, अपना राष्ट्रीय गान और अपनी राष्ट्र भाषा। हम 26 जनवरी, 1950 को अपना संविधान अपनाने के बाद अपने राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे झंडे को गर्व के साथ पूरे देश में फहराते आ रहे हैं और उतने ही गर्व से राष्ट्र गान 'जन गण मन' गाते आ रहे हैं पर राजभाषा हिंदी का नाम आते ही वह गर्व पता नहीं कहाँ विलीन हो जाता है?14 सितम्बर 1949 को देश को राजभाषा हिंदी का उपहार देने के बाद भी उसे उसका सम्मान अब तक नहीं मिल पाया है। इस बात की कसक सभी राष्ट्रवादी भारतीयों के मन में बनी हुई है। देश के प्रथम प्रधान मंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने कहा था :

"मुझे एक लम्बे समय से यक़ीन रहा है और आज भी है कि भारत की जनता की वास्तविक उन्नति और जन-जागरण अंग्रेज़ी के ज़रिये नहीं हो सकता। इस बात का इससे कोई संबंध नहीं है कि अंग्रेज़ी को हटा दिया जाए या रखा जाए, लेकिन इतना साफ़ है कि आम जनता के बीच संपर्क की भाषा अंग्रेज़ी नहीं हो सकती, इसलिए यह ज़रूरी है कि हम हिंदी के बारे में विचार करें - इसलिए नहीं कि हिंदी बांग्ला या मराठी या तमिल से श्रेष्ठ है, बल्कि इसलिए कि इस काम के लिए हिंदी ही सबसे उपयुक्त है।" इसीलिए अधिकांश भारतीयों का यह मानना है कि हमारी आज़ादी अभी अधूरी है। यों तो हिंदी अपने आदिकाल से ही पूरे भारत की भाषा रही है, पर अगर पुरानी बात छोड़ भी दें तो बीसवीं शताब्दी के शुरू में पूरे भारत का भाषायी सर्वेक्षण करने के बाद जिस हिंदी को जार्ज ग्रियर्सन ने अखिल भारतीय भाषा बताया था, उसी हिंदी को आज कुछ स्वार्थी, क्षुद्र राजनीति से प्रेरित लोग धर्म-विशेष, वर्ग-विशेष और क्षेत्र-विशेष के साथ जोड़कर तरह-तरह की भ्रांतियां फैला रहे हैं। एक सर्वथा विदेशी भाषा अंग्रेज़ी पराधीन देश पर वस्तुतः 'थोपी' गई पर आज स्वाधीन देश में उससे मुक्त होने के प्रयास करने के बजाय वे लोग अपने ही देश की भाषा हिंदी पर इल्ज़ाम लगाते हैं कि उसे उन पर 'थोपा' जा रहा है, 'लादा जा रहा है। देश-प्रेमी लोग प्रतिवाद करके वाद-विवाद बढ़ाने के बजाय समझाने-बुझाने का जिस ढंग से प्रयास करते हैं उससे एक शायर के शब्द याद आ जाते हैं :

मैं चुप रहा तो और ग़लतफहमियाँ बढ़ीं,
वो भी सुना है उसने जो मैंने कहा नहीं।

संविधान सभा को तो स्वतंत्र भारत की नई पीढ़ी से बहुत आशाएं थी, उसे विश्वास था कि स्वतंत्र वातावरण में पलने वाली संतति देश के लिए वह सब करेगी जिसे करने का अवसर पिछली पीढ़ी को परतंत्र वातावरण के कारण नहीं मिल पाया। हिंदी की बात करें तो पराधीन भारत में पली-बढ़ी पुरानी पीढ़ी ने हिंदी अपने स्कूली जीवन में नहीं, निजी प्रयासों से, और वह भी युवा या प्रौढ़ हो जाने के बाद सीखी थी। न जाने कितने लोगों ने तो जेल में रहते हुए बिना किसी 'बाल पोथी' के जेल-साथियों की मदद से सीखी थी क्योंकि हिंदी उनके लिए राष्ट्रीयता की केवल प्रतीक नहीं, राष्ट्रीयता का स्रोत भी थी। इसीलिए संविधान सभा ने राजभाषा के रूप में हिंदी का नियमित प्रयोग करने के लिए जो अवधि निश्चित की वह थी 15 वर्ष अर्थात् जब नई पीढ़ी देश की बागडोर संभाल लेगी। पर घटना-चक्र कुछ ऐसा घूमा कि बाद में देश के कुछ भागों में इस अवधि को बढ़ाने की मांग की जाने लगी जिसे ध्यान में रखते हुए अंग्रेज़ी का प्रयोग जारी रखने के लिए राजभाषा अधिनियम 1963 बनाया गया। साथ ही यह विचार भी चलता रहा कि फिलहाल अंग्रेज़ी को हटाए बिना सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए और क्या उपाय किए जा सकते हैं? ऐसे में उपायों की खोज करते हुए 1967 में राजभाषा अधिनियम में संशोधन करके धारा 3(3) का प्रावधान किया गया। इस धारा ने सरकारी कामकाज में अंग्रेज़ी के साथ हिंदी का प्रयोग संभव ही नहीं, आवश्यक बना दिया।

राजभाषा अधिनियम 1963 (यथा संशोधित 1967) की धारा 3(3) :

इस धारा में कतिपय ऐसे दस्तावेज़ हिंदी-अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में तैयार और जारी करना आवश्यक बताया गया है :

(क) जिनका सभी सरकारी कार्यालयों में प्रयोग होता है (जैसे, सामान्य आदेश, नियम, संकल्प, अधिसूचनाएं, प्रेस विज्ञप्तियां, प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्टें, संसद में प्रस्तुत की जाने वाली रिपोर्टें, निविदा के फार्म आदि)

(ख) नेमी किस्म का होने के कारण जिनमें एक निश्चित प्रकार की भाषा का अधिक प्रयोग होता है, और

(ग) जिनका संबंध जनता एवं जनता के प्रतिनिधि सांसदों से भी है।

धारा 3(3) की भावना :-

ध्यान से देखें तो इस धारा के माध्यम से एक साथ तीन काम किए गए हैं :

(1) सरकारी कार्यालयों के महत्वपूर्ण कागज़ों में हिंदी का प्रयोग शुरू करके संविधान के पवित्र संकल्प की रक्षा करने की व्यवस्था की गई है।

(2) जो सरकारी कर्मचारी हिंदी में काम करने लायक हिंदी जानते हैं, उनसे यह अपेक्षा की गई है कि वे धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले कागज़ हिंदी में भी तैयार करके हिंदी में काम करना शुरू कर दें।

(3) जो काम करने लायक हिंदी नहीं जानते, पर हिंदी पढ़ लेते हैं, उनके लिए सरकारी कामकाज वाली अर्थात् प्रयोजनमूलक हिंदी के कार्यालयी रूप का अप्रत्यक्ष रूप से 'प्रशिक्षण' भी शुरू हो गया।

अधिनियम की इस धारा के ये सभी महत्वपूर्ण पहलू हैं। किसी देश के लिए संविधान का वही महत्व है जो धर्म के लिए धार्मिक ग्रंथ का होता है। अतः उसका सम्मान करना ही चाहिए और संविधान हो या धार्मिक ग्रंथ, उनका सम्मान करने का अर्थ उन्हें किसी स्थान पर रखकर अगरबत्ती जलाकर, फूल चढ़ाकर, "पूजा" करना नहीं होता, उनका सम्मान, उनकी पूजा तो यही है कि जो प्रावधान उनमें किए गए हैं, जो व्यवस्थाएं दी गई हैं, जो बातें बताई गई हैं, उनके अनुरूप व्यवहार किया जाए, उन्हें अपने जीवन में उतारा जाए और इस प्रकार आदर्श समाज की स्थापना की जाए, संविधान ने हिंदी को राजभाषा बनाया है तो हमारा कर्त्तव्य है कि सरकारी कामकाज में उसका प्रयोग सुनिश्चित करें।

राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग करने में सरकारी कर्मचारी जो कठिनाई अनुभव करते हैं वह हिंदी के प्रयोजनमूलक रूप से और उसमें भी मुख्य रूप से पारिभाषिक शब्दावली से संबंधित होती है, कारण यह है कि जिस पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग वे अंग्रेज़ी में करते आ रहे हैं, उसके वे अभ्यस्त हो गए हैं। अब यदि उन्हें हिंदी का प्रयोग करना है तो उन्हें पारिभाषिक शब्दावली हिंदी में याद करनी होगी और उसका अभ्यास करना होगा। मनुष्य की इस सामान्य प्रवृति से हम सब परिचित हैं कि वह ऐसी नई चीज़ों को अपनाने में संकोचशील होता है जिनके विकल्प उसके पास पुरानी जीवन-शैली में मौजूद हों, ऐसी स्थिति में वह नई चीज़ों से बचना चाहता है। कंप्यूटर इसका सबसे ताज़ा उदाहरण है जिसके लाभ आज तो हम साक्षात देख रहे हैं पर शुरू में सरकारी कर्मचारियों ने उससे बचने की बहुत कोशिश की। इसी प्रकार जब उन्होंने यह देखा कि राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग करने के लिए उन्हें नई शब्दावली सीखनी पड़ेगी तो उन्होंने आत्मरक्षा की मुद्रा अपना ली और हिंदी के कुछ शब्दों के बारे में जो बात वे अन्य लोगों से सुनते आ रहे थे, उसी की आड़ लेकर पूरी शब्दावली को 'क्लिष्ट' बताकर उससे अपना पीछा छुड़ाने की कोशिश करने लगे जबकि वास्तविकता यह है कि यदि वे अपने काम से संबंधित शब्दावली को अध्ययन करें तो संभावना यही है कि उन्हें 'क्लिष्ट शब्द' या तो मिलेंगे ही नहीं या फिर उनकी संख्या बहुत कम होगी। लोगों ने तो हंसी-मज़ाक के लिए ही कुछ शब्द गढ़ लिए हैं (जैसे "रूमाल" के लिए "हस्त नाक पाद प्रक्षालन वस्त्र खंड", या "रेल" के लिए "लौह पथगामिनी" और "सिग्नल" के लिए "लौह पथगामिनी आवागमन सूचक पट्टिका") इनका कोई संबंध न पारिभाषिक शब्दावली से है और न हिंदी के किसी शब्दकोश से। वैसे ध्यान देने की बात यह भी है कि हर विषय की पारिभाषिक शब्दावली सीमित होती है, संख्या की दृष्टि से देखें तो औसतन लगभग दो सौ होती है। यही कारण है कि ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी वालों ने कला, विज्ञान, व्यापार-वित्त आदि की अंग्रेज़ी में जो 'विशेषज्ञ सूचियाँ' तैयार की हैं, उनमें प्रत्येक में 250 शब्द हैं। यदि कोई दुराग्रही न हो तो इतने शब्दों को याद करना और उनका अभ्यास करना कोई बहुत बड़ी बात नहीं है।

जैसा मैंने ऊपर कहा, राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) हिंदी के पारिभाषिक शब्दों को याद करने और अभ्यास करने का अवसर प्रदान करती है और इस प्रक्रिया को सरल भी बना देती है, पर व्यवहार में ऐसा हो नहीं पा रहा है, इसका मुख्य कारण यह है कि राजभाषा नीति के लिए विशेष रूप से अधिनियम की इस धारा का अनुपालन सुनिश्चित करने की दृष्टि से सरकारी कार्यालयों में 'राजभाषा अधिकारी' (जिन्हें आम बोलचाल में हिंदी अधिकारी कहते हैं) और अनुवादक नियुक्त कर दिए गए, अतः राजभाषा नीति का पालन करने के प्रति जो जागरुकता प्रत्येक सरकारी कर्मचारी में आनी चाहिए थी, वह आ ही नहीं पाई, इसी का परिणाम यह हुआ कि राजभाषा हिंदी की शब्दावली सीखने के लिए जो प्रयास उन्हें करने चाहिए थे, वे करने के बजाय उन्होंने राजभाषा अधिकारियों की बैसाखी के सहारे चलने की आदत डाल ली। इन राजभाषा अधिकारियों की अपनी सीमाएं और समस्याएं हैं। उन्हें अपने अध्ययन काल में 'साहित्य' का अध्ययन करने का ही अवसर मिलता है, अतः विभिन्न विषयों की जानकारी उन्हें या तो होती ही नहीं या बहुत सीमित होती है। अपने इस अज्ञान का उन्हें भी अहसास होता है और वे जानते हैं कि विभिन्न विषयों की सामग्री का अनुवाद करने में उनसे

तरह-तरह की भूलें होने की संभावना है, इससे बचने के लिए वे जो उपाय अपनाते हैं उनकी परिणति प्रायः शाब्दिक अनुवाद, अटपटे अनुवाद, उलझे वाक्य, लंबे बोझिल वाक्य, अस्पष्ट भाषा आदि के रूप में सामने आती है, पर लोग ऐसे अनुवाद का दोष भी 'पारिभाषिक शब्दावली' के मत्थे मढ़ देते हैं। अनुवाद की विसंगतियों का एक और पहलू भी है कि अनुवाद की जटिलताओं से अन्य लोग परिचित नहीं है। वे इसे एक सामान्य-सा काम समझते हैं, इसी भ्रांति धारणा के कारण वे अनुवाद के लिए पर्याप्त समय नहीं देते और फिर अनुवाद में होने वाली देरी को एवं जल्दबाजी में किए गए अनुवाद की कमियों को राजभाषा अधिकारी की अक्षमता मान लेते हैं। इस प्रकार राजभाषा नीति की अपेक्षाएं एक दुश्चक्र में फंस जाती हैं और इसी कारण धारा 3(3) का प्रयोजन भी कहीं पीछे छूट जाता है।

इस धारा की जो भावना है वह तभी पूरी हो सकती है जब किसी प्रपत्र (डाक्युमेंट) के अंग्रेज़ी और हिंदी पाठ 'एक साथ' प्रस्तुत किए जाएं और प्रत्येक भाषा में उनके पाठ स्पष्ट हों, जब किसी प्रपत्र का अंग्रेज़ी पाठ पहले जारी कर दिया जाता है और हिंदी पाठ बाद में अलग से जारी किया जाता है तो ज़ाहिर है कि व्यक्ति अंग्रेज़ी पाठ ही पहले पढ़ेगा। अब जो व्यक्ति उस प्रपत्र को एक बार पढ़ चुका है या जो उसमें दिए अनुदेश का पालन करना शुरू भी कर चुका है वह बाद में आए हिंदी पाठ को पढ़ेगा ही नहीं। ऐसी स्थिति तब भी होती है जब हिंदी पाठ अस्पष्ट होता है और उसे समझने के लिए अंग्रेज़ी पाठ पढ़ना पड़ता है। इस स्थिति में तो केवल इस धारा का नहीं, पूरी राजभाषा नीति का प्रयोजन ख़त्म हो जाता है, अतः आवश्यक है कि हिंदी-अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं के पाठ साथ-साथ जारी किए जाएं और दोनों भाषाओं में, विशेष रूप से हिंदी में बिल्कुल स्पष्ट हों तभी उसकी भावना पूरी हो सकती है और उसका प्रयोजन सफल हो सकता है।

मेरा मानना है कि इस अधिनियम का प्रयोजन और भी बेहतर ढंग से पूरा हो सकता है अगर धारा 3(3) के लिए अपेक्षित अनुवाद स्वयं वे ही कर्मचारी करें जो अंग्रेज़ी में प्रपत्र तैयार करते हैं, वे जानते हैं कि वे क्या कहना चाहते हैं, अतः भाषा चाहे अंग्रेज़ी हो या हिंदी, वे अपनी बात सही ढंग से व्यक्त कर ही देंगे और इस प्रकार हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के भी वे अभ्यस्त होते जाएंगे। मेरा सुझाव है कि जो कर्मचारी धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले प्रपत्रों के दोनों पाठ स्वयं तैयार करें, उन्हें प्रेरणा और प्रोत्साहन नीति के अंतर्गत "विशेष पुरस्कार" दिए जाएं, उनकी वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट में इसका विशेष रूप से उल्लेख किया जाए और पदोन्नति में भी विशेष महत्त्व दिया जाए, (राजभाषा अधिकारियों की) बैसाखी छोड़ कर अपने पैरों पर खड़े होने और स्वावलंबी बनने से बेहतर क्या चीज़ हो सकती है। वैसे भी तो राजभाषा नीति का उद्देश्य हमें अपने देश की भाषा का प्रयोग करके स्वावलंबी बनाना ही है न।

सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति
सेवा-निवृत निदेशक, बैंकिंग प्रभाग, वित्त-मंत्रालय
निवास : कोठी नं. 21, रोड नं. 19,
पंजाबी बाग (पूर्वी), नई दिल्ली-110 026

पाठकों से निवेदन

बैंक के राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं प्रोत्साहन हेतु 'पी.एस.बी. राजभाषा अंकुर' पत्रिका का विगत दो दशकों से सफल प्रकाशन किया जा रहा है। इस प्रकाशन में राजभाषा हिंदी के साथ-साथ आर्थिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, बैंकिंग, कंप्यूटर एवं मानव-संसाधन से जुड़े लेखों के प्रकाशन के साथ-साथ हास्य-व्यंग्य, कविता, ग़ज़ल का प्रकाशन किया जाता है। स्टाफ़-सदस्यों के बच्चों को प्रेरित करने के लिए उनकी शैक्षिक उपलब्धियों, स्कैच, पेंटिंग को भी यथोचित स्थान प्रदान किया जाता है। इसे बहुआयामी, प्रेरक और प्रोत्साहन माध्यम बनाने के लिए सभी का सहयोग एवं मार्गदर्शन अपेक्षित है। राजभाषा विभाग में आपके मूल लेख, कविता, सुझाव एवं प्रतिक्रियाएं सादर आमंत्रित हैं।

मुख्य संपादक

पी.एस.बी. राजभाषा अंकुर

पंजाब एण्ड सिंध बैंक, प्र.का. राजभाषा विभाग

21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-110008

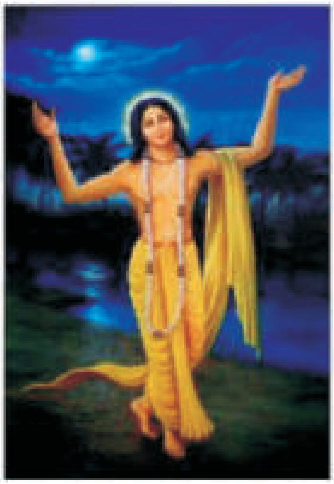

चैतन्य महाप्रभु

डॉ. नीरू पाठक

मृदंग, झांझ, मजीरे की थाप पर, 'हरे कृष्ण, हरे राम' की मधुर ताल पर भक्तों को अपने इष्टदेव की स्मृति में आनंद विभोर हो नृत्य करते देख कर बरबस ही दिल यह सोचने लगता है कि किसने आरंभ की यह अलौकिक परंपरा जिसमें भक्त देहाध्यास से ऊपर उठ, 'संपूर्ण समर्पण के भाव में नाम संकीर्तन में मग्न हो परमानन्द को प्राप्त होता है। इसका श्रेय जाता है - कृष्ण भक्ति की अजस्र धारा को गौड़ीय संप्रदाय के द्वारा जन-जन तक पहुँचाने वाले ''चैतन्य महाप्रभु'' को।

चैतन्य महाप्रभु का जन्म सन् 1486 में फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को पश्चिम बंगाल स्थित नवद्वीप (नादिया) नामक गाँव में हुआ जिसे अब मायापुर कहते हैं। बाल्यावस्था में विश्वंभर नाम रखा गया। नीम के पेड़ के नीचे मिलने के कारण इनका नाम निमाई भी रखा गया। गौर वर्ण होने के कारण इन्हें गौरांग, गौर और सुंदर भी बुलाते थे। इनके पिता का नाम जगन्नाथ मिश्र तथा माता का नाम शचिदेवी था। निमाई अत्यंत आकर्षक, गौर वर्ण, सुंदर एवं सरल तथा अत्यंत भावुक होने के साथ विलक्षण प्रतिभा के भी धनी थे जिस विद्यालय में इन्होंने शिक्षा प्राप्त की उसी विद्यालय में अध्यापन कार्य भी किया। मात्र 15 वर्ष की आयु में इनका विवाह लक्ष्मी प्रिया के साथ हुआ किंतु दंश से उसकी मृत्यु हो गयी। इनका दूसरा विवाह विष्णु प्रिया से हुआ जो स्वयं भगवान विष्णु की परम भक्त थीं। बनारस में इनकी भेंट संत ईश्वरपुरी से हुई और उन्होंने इन्हें ''कृष्ण नाम'' का नाम दान दिया। इनके प्रथम दो शिष्य नित्यानंद प्रभु तथा अद्वैताचार्य महाराज थे। तभी से ढोलक, मृदंग, मंजीरे बजाते हुए, उच्च स्वर में नाम गान करते हुए, आनन्दातिरेक में नृत्य करते हुए प्रभु के नाम का संकीर्तन करने की परंपरा का शुभारंभ हुआ। 16शब्दीय (32 अक्षरीय) महामंत्र :

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

निमाई की ही देन है। सन् 1510 में संत श्री केशव भारती से दीक्षा लेने के उपरांत इनका नाम चैतन्य महाप्रभु हो गया। मात्र 24 वर्ष की आयु में इन्होंने सन्यास ग्रहण किया और गृहस्थ आश्रम का त्याग कर तीर्थाटन के लिए चल दिए। सर्वप्रथम पुरी के जगन्नाथ मंदिर पहुँचे जहाँ भगवान जगन्नाथ के दर्शन कर आनंद से नृत्य करने लगे और आत्म-विभोर हो मूर्छित हो गए।

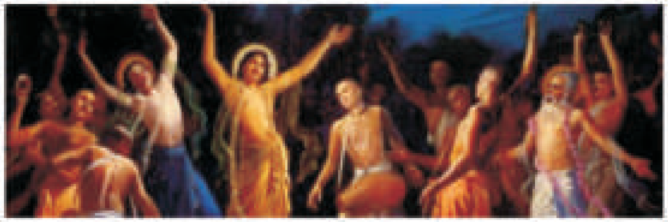

वहाँ मंदिर के प्रधान पुजारी भट्टाचार्य जी इन्हें अपने घर ले गए जहाँ कुछ समय उनके साथ रहकर चैतन्य नीलांचल चले गए। इसके पश्चात् सेतुबंध और दक्षिण की यात्रा के उपरान्त सन् 1515 में विजयादशमी के दिन इन्होंने वृन्दावन की ओर प्रस्थान किया। वृन्दावन में सघन वनों में कृष्ण नाम संकीर्तन में जब यह मग्न हो जाते तो पशु-पक्षी भी इनके आनंद में भागीदार हो मूक हो जाते। कार्तिक मास की पूर्णिमा को यह वृन्दावन पहुँचे, आज भी इस दिन को महाप्रभु के आगमन उत्सव के रूप में धूम-धाम से मनाया जाता है। इनके शिष्यों में बौद्ध, जैनी, मायावादी एवं वैष्णव भी थे। इन्होंने भक्ति की ऐसी लहर को जन्म दिया कि बहुत से हिन्दू धर्म से धर्म परिवर्तित मुसलमान फिर से हिंदू धर्म में दीक्षित हुए इनके प्रमुख शिष्य रूप गोस्वामी एवं सनातन गोस्वामी (परिवर्तित नाम) ऐसे ही थे। इन दोनों भाईयों को संस्कृत, अरबी एवं फ़ारसी का अच्छा ज्ञान था, इन्हें चैतन्य महाप्रभु ने वृंदावन भेज दिया तथा षट्गोस्वामी में स्थान दिया। इन्होंने प्रभु नित्यानंद को बंगाल में तथा षट्गोस्वामियों को वृन्दावन में कृष्ण भक्ति के प्रचार एवं प्रसार में लगाया। जीवन में यह मात्र दो बार ही वृंदावन आए। मातृ-प्रेम के कारण कालान्तर में मायापुर तथा पुरी में ही अधिकाधिक समय बिताया। इनका एकमात्र ग्रन्थ 'शिक्षा-अष्टक'' है किंतु स्वामी कृष्णदास द्वारा रचित ''चैतन्य चरितामृत'' में गौड़ीय संप्रदाय के मूलभूत दर्शन का व्यापक स्वरूप मिलता है। ज्ञान पर भक्ति की विजय, प्रेम भक्ति के द्वारा दरिद्र नारायण की सेवा तथा आध्यात्मिक चेतना का प्रसार ही कृष्ण भक्त के जीवन का परम उद्देश्य है।

इनके प्रमुख शिष्यों में तुकाराम भी हैं, जिनके अभंग महाराष्ट्र क्षेत्र में अत्यंत प्रसिद्ध हुए। जाति और धर्म से ऊपर उठकर कृष्ण-भक्ति का शुभारंभ कर सन् 1533 में मात्र 47 वर्ष की अल्पायु में रथ-यात्रा के दिन महाप्रभु ने परमधाम की ओर प्रस्थान किया।

- प्र.का. राजभाषा विभाग, नई दिल्ली

ऐसा विचार जो मुझे पहले आना चाहिए था...

डी. डी. नाग

लगभग एक वर्ष बीत गया, मुझे बैंक की सेवाओं से सेवामुक्त हुए, लेकिन जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ तो पाता हूँ कि यह एक वर्ष मेरी कल्पना से कहीं अधिक तेज़ी से व्यतीत हो गया। जबकि बैंक से सेवामुक्त होने से कुछ दिन पूर्व मैं चिंतित था कि सेवामुक्त होने के पश्चात् समय बिताना कितना कठिन होगा। एक व्यक्ति जो पिछले 35-40 वर्षों से सुबह नौ बजे से पाँच बजे तक और कभी-कभी इससे भी अधिक समय कार्यालय में काम करते हुए व्यतीत करता है। उसके लिए कार्यालय न जाने तथा काम के नहीं होने से समय व्यतीत करने की कल्पना करना भी अत्यंत कष्टप्रद होगा। किंतु अब जबकि एक वर्ष से अधिक समय इस प्रकार निकल गया मानो समय उड़ गया हो और साथ ही मुझे भी समय के साथ पंख लग गए हों क्योंकि मैंने समय के विपरीत न चलकर, उसके साथ हाथों में हाथ लिए चलना श्रेयस्कर समझा और महसूस किया कि इसमें कितना आनंद है। एकाएक मुझे एहसास हुआ कि गत वर्षों में कभी-कभार ही मैंने अपने आपको जानने और समझने की कोशिश की थी। जीवन में आने वाले तमाम उतार-चढ़ाव जिन्होंने मुझे बनाया और वो सभी जिनमें मैं जीना चाहता था, छूटते चले गए और मुझे इसका पता भी नहीं चला।

घूमना, संगीत सुनना, फ़िल्में, पुस्तकें, शाम की चाय, लिखना.. और वो सभी जो मुझे खुशी और शांति देता, मैं उसे लगातार टालता ही रहा। अन्ततः आज जब मेरे पास समय है, अपने अनुसार हर्षोल्लास के साथ पढ़ने का, घूमने का। मैं सोचने के लिए मजबूर हो जाता हूँ कि इन सबको सेवा-मुक्त होने से पूर्व लगातार टालते रहना क्या सही था? काम करना महत्वपूर्ण है और हम इसके लिए वचनबद्ध भी हैं, परंतु जीवन को जीने के लिए क्या इतना ही आवश्यक है? मैंने बहुत बार अपने साथियों और मित्रों को बातें करते सुना था कि सेवा-मुक्त होने के पश्चात् जन-सेवा तथा अपने मनपसंद सभी कार्य करेंगे। मैंने देखा था कि अपनी योजनाओं पर विचार-विमर्श करते हुए उनकी आँखों में चमक आ जाती थी और चेहरा दमकने लगता था। आज जब मैं उन चेहरों के बारे में सोचता हूँ तो मुझे आश्चर्य होता है कि यह क्या है जो जीवन के इस पन्ने को न खोलने के लिए मजबूर करता है? हमारा धर्म हमें लगातार सावधान करता है कि जीवन को केवल दान में मिली हुई वस्तु न समझो। बहुत सी अनहोनी घटनाएँ जोकि बार-बार हमें याद दिलाती हैं अब मैं महसूस करता हूँ कि अपने सपनों और प्रसन्नतासूचक कार्यों को पूर्ण करने में देरी हमारे स्वभाव में क्रोध को जन्म देकर हमें अपराधबोध से ग्रस्त करती है। मैंने एक क्षण के लिए भी कभी ऐसा नहीं सोचा कि अपनी खुशी के लिए घर - परिवार तथा ऑफ़िस की ज़िम्मेदारियों से बचूं। वास्तविक जीवन तथा जीवन हेतु अर्जन के बीच एक बनावटी विभाजन में अब मुझे क्या प्रतीत होता है मैं सिर्फ़ इस पर विचार करना चाहता हूँ। वे सौभाग्यशाली हैं जो काम को अपना जुनून मानते हैं, परंतु हम सब जानते है कि काम के प्रति उनकी ईमानदारी और वचनबद्धता से भी ज़्यादा बहुत कुछ है, उनका यह जोश संयोग नहीं है जो वे जन्म से ही ऐसा महसूस करते हैं। यदि आप भी उनमें से एक बनना चाहते हैं तो प्रत्येक दिन जागने तथा जिस दिन आप सचमुच जीना शुरू करेंगे, उस दिन की प्रतीक्षा करने की बजाए, जो आप हमेशा करना चाहते हैं उसके लिए अभी से ही अपनी ज़िंदगी के कुछ पल, घंटे या संभव हो तो कुछ दिन निकालना शायद एक अच्छा विचार होगा। कौन जानता है कि वर्षों पारिवारिक उत्तरदायित्वों को निभाते हुए तथा कार्यस्थल पर पूर्ण समर्पण के पश्चात् जीवन क्या होगा?

\- सेवानिवृत्त महाप्रबंधक

स्मृतिशेष : फणीश्वरनाथ रेणु एवम् लतिका रेणु

राकेश चन्द्र नारायण

फणीश्वरनाथ रेणु मानवीय भावनाओं के उस चितेरे का नाम है जिसने प्रेमचंद के बाद हिंदी में श्रेष्ठतम गद्य रचनायें कीं। उनका कथा लेखन द्वितीय विश्वयुद्ध के अंतिम दौर से शुरू हो सत्तर के दशक तक अविराम चलता रहा। उनके लिखे हर शब्द ने मानव-मन के अंतरतम को सजीव कर दिया। उनके उपन्यास को पढ़कर समाप्त करने तक पाठक अनेक चरित्रों, घटना-प्रसंगों और संवादों के चमत्कारों से इतना सामीप्य अनुभव करने लगता है कि उनसे, बिछुड़ना हृदय में कसक पैदा करता है। कथाकार होने के साथ-साथ रेणु जी राजनीतिक सामाजिक कार्यकर्ता भी थे। इन्होंने भारत और नेपाल की जनता की मुक्ति के कई आंदोलनों में भाग लिया। वे असल मायनों में मुक्ति योद्धा थे तथा अन्य रचनाकारों की तरह स्थितियों के मात्र द्रष्टा नहीं। 1942 के आंदोलन से लेकर हर बड़े आंदोलन में वे कलम के साथ-साथ बंदूक थामने के भी हिमायती थे। जो लोग उनकी कलम के जादू से सम्मोहित थे, उनकी कमर में लटक रहे रिवाल्वर को देखकर अचंभित होते थे।

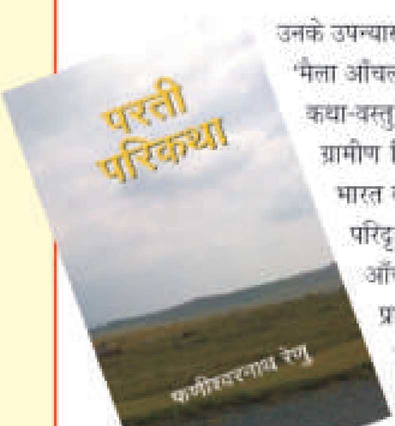

उनके उपन्यासों का परिवेश बिहार का कोशी क्षेत्र है। 'मैला आँचल' उनका प्रतिनिधि उपन्यास है। इसकी कथा-वस्तु बिहार के पूर्णिया जिले के मेरीगंज की ग्रामीण ज़िंदगी से संबद्ध है। यह उस समय के भारत के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिदृश्य का ग्रामीण संस्कार है। इसे हिंदी में आँचलिक उपन्यासों के प्रवर्तन का श्रेय प्राप्त है। 'मैला आँचल' और 'परती परिकथा' उनकी अनुपम कृतियाँ हैं जो आंचलिक साहित्य का मानक मानी जाती है। उनकी प्रसिद्ध कहानी 'मारे गए गुलफ़ाम' पर राजकपूर और वहीदा रहमान अभिनीत 'तीसरी कसम' यादगार फ़िल्म बनी। यह कहानी जितनी सहज-स्वाभाविक है, उतनी ही प्रभावकारी और मोहक भी। उत्तर-पूर्वी बिहार के एक पिछड़े अंचल को पृष्ठभूमि बनाकर रेणु ने वहाँ के जीवन का चित्रण बड़े ही जीवन्त और मुखर रूप से किया है।

1942 के आंदोलन में गिरफ़्तार होने के बाद रेणु 1944 में जेल से छूटे और कहानियाँ एवम् रिपोर्ताज़ लिखना प्रारंभ किया। रेणु का मानना था "....गत महायुद्ध ने चिकित्सा शास्त्र के चीर-फाड़ (शल्य-चिकित्सा) विभाग को पेनसिलिन दिया और साहित्य के कथा विभाग को रिपोर्ताज।" वे तीन सामाजिक राजनीतिक हलचलों और आंदोलनों में शरीक थे, उन्हें अंकित करने को उनका कथाकार उन्हें उद्वेलित करता रहता था, इसलिए उन्होंने रिपोर्ताज़ लिखना शुरू किया। इस क्रम में उन्होंने जय प्रकाश जी द्वारा संचालित सत्तर के दशक के जन-आंदोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। 11 अप्रैल, 1977 को हिंदी साहित्य जगत का महान सर्जक हमसे सदा के लिए जुदा हो गया। उनकी लेखनी की असल ताकत उनकी पत्नी लतिका रेणु (शादी के पूर्व राय चौधरी) थी। 13 जनवरी, 2011 गुरूवार को लतिका जी का अररिया जिले के फारबिसगंज प्रखंड के औराई हिंगना गाँव में निधन हो गया। रेणु जी का पैतृक गाँव औराई हिंगना है। वे 86 वर्ष की थीं, लंबे समय से अस्वस्थ रही थी। उनकी मृत्यु के बाद इस ग्राम में तथा साहित्य प्रेमियों को ऐसा लगा जिसे रेणुजी के ही शब्दों में अभिव्यक्त किया जा सकता है :-

थर-थर काँपे धरती मैया, रोए जी आकास,
घड़ी-घड़ी पर मूर्छा लागे, बेर-बेर पियास,
घाट न सूझे, बाट ना सूझे, सुझे न अप्पन हाथ

....कहते हैं कि साहित्य समाज का आईना होता है और समय की रेत पर शब्दों के निशान मौजूद होते हैं। 'मैला आंचल' की कालजयी सरगम में लतिका जी 'स्थायी' की तरह हमेशा मौजूद रहेंगी। वे साक्षात् सरस्वती थीं। अगर वे नहीं होती तो "मैला आंचल" भी दुनिया के सामने नहीं आ पाता।

लतिका जी उनकी दूसरी पत्नी थी। यह विवाह 1952 में हुआ था। लतिका रायचौधरी का जन्म हजारी बाग में हुआ था, जहाँ उनके पिता प्रोफ़ेसर चारूचंद्र राय चौधरी संत कोलम्बस कॉलेज में गणित के प्राध्यापक थे। लतिका जी ने 1943 में इंटरमीडिएट की परीक्षा पास करने के पश्चात् पटना मेडिकल कॉलेज अस्पताल के नर्सिंग पाठ्यक्रम में दाखिला लिया। 1942 के 'भारत छोड़ो' आंदोलन में गिरफ्तार होने के बाद रेणु जी 1944 के मध्य में भागलपुर सेंट्रल जेल से अस्वस्थता के कारण सीधे पटना मेडिकल कॉलेज पहुँचाए गए। उस समय लतिका जी नर्सिंग के दूसरे साल की छात्रा थीं। रेणुजी बीमार थे तथा लतिकाजी की ड्यूटी प्रशिक्षु नर्स के रूप में उनके ही वार्ड में थी। वहीं रेणुजी की मुलाकात लतिकाजी से हुई। 1945 में रिहा होने के बाद रेणुजी औराही हिंगना चले गए पर 1948 में उन्हें दोबारा क्षय रोग हो गया। घोर रूप से बीमार रेणुजी के बारे में सभी कहते थे कि बचेंगे नहीं पर लतिका जी की सेवा-सुश्रुषा ने उन्हें मौत के मुँह से बाहर निकाल लिया। तब लतिका जी हेल्थ विज़िटर बन गई थी।

स्वास्थ्य लाभ के बाद रेणुजी गाँव चले गए पर पत्रों का अंतहीन सिलसिला चलता रहा। रेणु जी ने अपनी पत्नी पद्मा के बारे में लतिका जी को कुछ नहीं बताया था।

1951 में रेणुजी फिर गंभीर रूप से बीमार हो गए। लतिका जी सब्जी बाग में रहती थीं तथा रेणु जी सामान के साथ उनके घर आ गए। साधिकार लतिका जी ने कहा "हर बार मरने लगते हो तो मेरे पास चले आते हो।"

रेणुजी का जवाब था "और कहाँ जाऊँ।"

अजनबी पुरुष के साथ अविवाहित लतिका का रहना चर्चा का विषय बन गया। परिवार ने लतिका जी को विवाह की अनुमति नहीं दी पर वे अडिग थीं। रेणुजी ने 5 फरवरी 1952 को लतिका जी से विवाह किया।

रेणुजी लतिका को ब्याह कर गाँव लाए जहाँ पद्माजी ने फूल माला से स्वागत किया। रेणुजी को लतिका की नर्स की नौकरी पसंद नहीं थी पर आर्थिक समस्याओं के कारण वह नौकरी करती रहीं। लतिका जी के भंवर पोखर के सरकारी आवास में रेणु जी ने "मैला आंचल" लिखा पर उसे छपवाने के लिए पैसे नहीं थे। लतिका जी ने अपने गहने बेचकर पुस्तक प्रकाशित करवाई और रेणुजी को दुनिया भर में पहचान मिली। लतिका जी के प्रेम और त्याग ने ही रेणुजी को अखिल भारतीय स्तर का लेखक बनाया।

लतिका जी ने भी अपने जीवन में खूब संघर्ष किया तथा रेणुजी का हर समय साथ दिया। उन्होंने बांग्ला में एम. ए. किया तथा एक स्कूल के अध्यापन से जुड़ीं। प्यार से रेणु लतिका जी को मोकी कहकर बुलाते थे। राजेन्द्र नगर मकान संख्या 2/30 रेणु का आख़िरी बसेरा था। 1944 से 1977 तक का लंबा सफ़र लतिका ने रेणु जी के साथ तय किया। उम्र के आख़िरी पड़ाव में लतिका दूसरी बार ससुराल आयी। रेणुजी की दोनों पत्नियाँ दशकों बाद एक-दूसरे से मिलीं तो रेणु का अधूरा सपना पूरा हो गया। हालाँकि वह अपने जीवन-काल में इसके साक्षी नहीं बन सके। रेणु परिवार एक छत के नीचे रहने लगा।

रेणुजी को लतिका से कोई संतान नहीं थी जबकि पद्माजी से चार संतान हुईं। रेणु जी ने सन् 1972 में निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में फारबिसगंज से विधान सभा का चुनाव लड़ा था पर जीत नहीं पाये थे। लतिका जी के मन में यह बात खटक रही होगी पर उन्होंने उनके पुत्र पद्मपराग राय रेणु को विधायक के रूप में देख लिया।

लतिका जी सरस्वती थीं पद्माजी लक्ष्मी। एक रेणु की लेखनी की शक्ति थीं तो एक परिवार के पीछे की ताकत।

- महाप्रबंधक (राजभाषा)

रचनाकारों से निवेदन

बैंक के राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका "राजभाषा अंकुर" में प्रकाशन हेतु रचना भेजते समय कृपया रचना के अंत में अपना नाम, शाखा / कार्यालय का पूरा पता, मोबाइल नंबर तथा अपने बैंक की 14 अंकों की खाता संख्या भी अवश्य लिखें।

- मुख्य संपादक

चंडीगढ़ बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में "राजभाषा कार्यान्वयन में उच्चाधिकारियों की भूमिका" विषय पर आयोजित सेमिनार

स्थानीय प्रधान कार्यालय, चंडीगढ़ के महाप्रबंधक श्री इकबाल सिंह भाटिया सहभागियों को संबोधित करते हुए।

चंडीगढ़ नराकास सचिव श्री अमरजीत बट्टू अध्यक्षीय भाषण देते हुए।

राजभाषा प्रबंधक श्री त्रिलोचन सिंह सेमिनार की उपयोगिता बताते हुए।

मंचासीन श्री अमरजीत बट्टू श्री इकबाल सिंह भाटिया एवं श्री एस. पी. एस. कलसी।

सेमीनार में सहभागिता करते हुए विभिन्न बैंकों के उच्चाधिकारी।

मेरी पुदुचेरी यात्रा

दिनेश कुमार गुप्ता

जनसंख्या के अनुसार देश के सबसे बड़े केन्द्र शासित प्रदेश दिल्ली से सुदूर दक्षिण में देश के दूसरे सबसे बड़े केन्द्र शासित प्रदेश पुदुचेरी (तमिल में जिसका अर्थ है ''नया नगर'') में वर्ष 2013 के अंत में जाने का अवसर मिला। शिशिर ऋतु में तो समुद्र तट वाला हर स्थान अत्यन्त सुहावना रहता है। दिल्ली की कड़ाके की ठंड से तीन दिनों के लिए सुखद निजात मिली। बंगाल की खाड़ी के तट पर स्थित पुदुचेरी की यह मेरी प्रथम यात्रा थी। महर्षि अरविन्दों और 'दि मदर' के नाम से जाने वाले पुदुचेरी के बारे में मन में एक उत्साहपूर्ण जिज्ञासा थी।

छोटे से पुदुचेरी (पूर्व में पांडिचेरी) हवाई-अड्डे पर पूरे दिन में केवल एक विमान आता और वापस जाता है - बेंगलुरू से स्पाइस जेट का। अधिकतर लोग रेल अथवा वायुमार्ग से चेन्नई आते हैं और फिर सड़क मार्ग से पुदुचेरी पहुँचते हैं। भाषा, पहनावा, खान-पान, संस्कृति सब के लिहाज़ से पुदुचेरी तमिलनाडु राज्य का अंग प्रतीत होता है।

मौसम देवता की अत्यन्त कृपा रही। न तो दिल्ली में कोहरा मिला, न ही बेंगलुरू में और दोनों ही उड़ानें निर्धारित समय से पूर्व ही लैंड कर गई। बड़ी अच्छी अनुभूति हुई, मौसम एवं एयरलाइन को धन्यवाद दिया, क्योंकि एक दिवस पूर्व ही कोहरे के कारण बेंगलुरू हवाई अड्डे पर 17 उड़ानें विलम्बित रहीं और 2 को तो चेन्नई भेजना पड़ गया था।

रुकने की व्यवस्था सरदार वल्लभभाई पटेल मार्ग स्थित होटल 'आनन्द इन' में थी। सुविधाएं, सेवा एवं भोजन सभी उत्तम था। सबसे अच्छी बात यह रही कि यहाँ से समुद्र तट (बीच) निकट था और पैदल का क़रीब 10 मिनट का ही रास्ता था वहाँ हर सुबह और शाम 'बीच' पर सैर का आनंद उठाया। सायं 6 बजे से प्रातः 7.30 बजे तक यह मार्ग वाहन मुक्त क्षेत्र रहता है।

'बीच' के निकट ही फ्रांसीसी शैली में निर्मित श्री अरविन्दों आश्रम है, जहाँ महर्षि अरविन्दों की समाधि है। 5 दिसम्बर, 1950 को उनके स्वर्गवास के 4 दिन बाद समाधि बना दी गई थी। श्रद्धा भाव से वहाँ पहुँचा और अभूतपूर्व शांति का अनुभव हुआ। इतने सारे लोग आ जा रहे थे, वहाँ बैठ कर ध्यान भी कर रहे थे, पर गज़ब का अनुशासन एवं आत्म-नियंत्रण दिखा। 'पिन ड्राप साइलेंस' कैसा होता है, प्रत्यक्ष में देखा। शांति इतनी कि चिड़िया का चहचहाना भी दिन के समय साफ सुनाई पड़ रहा था। कभी-कभार वाहन के हॉर्न की ध्वनि से ही शांति भंग होती थी। समाधि पर फूलों की अति सुंदर सजावट थी। प्रसाद था पानी की ट्रे में रखी हुई तुलसी की पत्ती का। पास में ही महर्षि और माँ से संबंधित पुस्तकों, छाया-चित्रों व स्मृति-चिन्हों की बिक्री की व्यवस्था भी थी। दोपहर में 2 घंटे के अवकाश सहित आश्रम प्रातः 8 बजे से सायं 6 बजे तक दर्शनार्थ खुला रहता है।

समीप ही 15वीं सदी के पूर्व का बना हुआ दक्षिण भारतीय शैली का गणेश मंदिर था। स्थानीय भाषा में उसका नाम ''अरुलमिगु मनकुला विनायगर देवस्थानम' है। संयोग से वहाँ आरती के समय ही पहुँचा और प्रसाद ग्रहण किया। श्रद्धालुओं की काफ़ी भीड़ थी। क्रिसमस व नववर्ष की छुट्टियाँ होने के कारण यहाँ एवं 'बीच' पर पर्यटक भी अच्छी संख्या में देखे जा रहे थे। गरम कपड़ों का तो नामोनिशान भी नहीं था।

'बीच' पर ही पुदुचेरी सरकार के मुख्य सचिवालय का श्वेत वर्णी सुंदर भवन था और उसके साथ ही फ्रांस की कैन्स्युलेट थी। जैसे कि सत्ता के फ्रांस से भारत को हस्तांतरण को दर्शा रहा हो। (पुदुचेरी में फ्रांसीसी वास्तु-कला वाले बहुत सारे सुरुचि पूर्ण आवास-गृह और कुछ भव्य

भवन भी दिखे। पुलिस अधिकारियों की लाल टोपी फ्रांसीसी दिनों से चली आ रही है। वहीं एक आलीशान 'प्रोमिनेड' होटल है तथा 'विला बैयोड' नामक लाल रंग का हेरिटेज होटल भी है। पुदुचेरी सरकार का युद्ध स्मारक है, फ्रांसीसी दिनों का कस्टम भवन है, जहाँ अब भारत सरकार का केंद्रीय उत्पाद शुल्क व सेवा कर कार्यालय है। निकट ही श्वेत रंग का आकर्षक फ्रांसीसी शहीद स्मारक बना हुआ है। कभी जलयानों के लिए पथ प्रदर्शक रहा श्वेत रंग का प्रकाश-स्तम्भ (लाइट हाउस) है। 'बीच' पर समुद्र में नहाना प्रतिबंधित है। कई वर्षों पूर्व वहाँ दुर्घटना हो गई थी। फिर ढेर सारी काली चट्टानों के कारण सहजता से जाना संभव भी नहीं लगा।

महान विभूतियों की बात करें तो 'बीच' पर ही सफ़ेद संगमरमर की सुंदर छतरी में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की प्रतिमा है। पर्यटक बड़े उत्साह से वहाँ फ़ोटोग्राफी करते हुए देखे जाते हैं। थोड़ा आगे भारत-रत्न डॉ० बाबा साहेब अम्बेडकर का सुंदर सा मनिमन्दरम (मंदिर) है। आदर भाव से लोग उनके दर्शन कर रहे थे। भव्य उपराज्यपाल भवन भी वहाँ से अधिक दूरी पर नहीं है।

शहर से 15 कि.मी. की दूरी पर बना हुआ है "औरोविले" उपनगर, जो

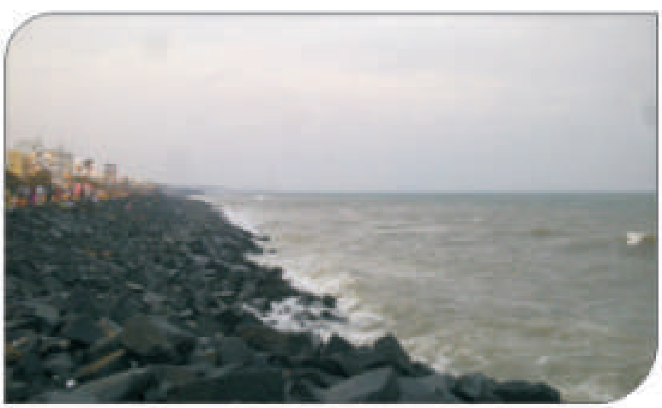

'मदर' के उस सपने को साकार करता है कि धरती पर कोई ऐसा स्थान हो जिस पर कोई देश अपना प्रभुत्व न जता सके और जहाँ सभी सच्चे अच्छे लोग विश्व नागरिक की तरह सौहार्द से रह सकें और एक ही सत्ता परम सत्य को मानें। उद्यान एवं क्षेत्र का विकास कार्य अभी चल रहा है। आगंतुक केन्द्र में औरोविले पर 20 मिनट की वीडियो फ़िल्म दिखाई जाती है, आपके आगमन को और सार्थक बनाने हेतु।

स्वर्णिम् 'मातृमन्दिर' औरोविले के दिव्य भाव का एक जीवंत प्रतीक है। वहाँ जाने के लिए शटल बस सेवा भी है और पैदल भी 15 मिनट में पहुँचा जा सकता है। रास्ते में शिलापटों पर सुंदर पुष्प-चित्र तथा शांति, प्रगति, कृतज्ञता आदि विषयों पर अच्छे-अच्छे संदेश भी मिलते जाते हैं। मातृमन्दिर दूर से देख सकते हैं और पंजीकरण कराके 2-3 दिन बाद बारी आने पर उसके भीतर जाकर ध्यान भी कर सकते हैं। समय के अभाव के कारण हमें उसे दूर से ही निहार कर संतोष करना पड़ा।

मातृमन्दिर का निर्माण 1979 में पूर्ण हो गया था। आर्किटेक्ट रोज़र एन्गर ने इसे 12 बड़े-बड़े लाल रंग के पत्तों के पूरे खिले हुए एक सुनहरे रंग के कमल के फूल का आकार दिया है। मातृमंदिर के चारों ओर 12 उद्यान है जिनका नामकरण अस्तित्व, चेतना, परमानन्द, प्रकाश, जीवन, शक्ति आदि - पूज्य, 'मदर' ने ही किया था। औरोविले परिसर में विदेशी मूल के भी काफी श्रद्धालु स्थायी रूप से निवास कर रहे हैं।

कुल मिलाकर बहुत अच्छा समय-बीता और तीन दिन कब निकल गये, पता ही नहीं चला। इंटरनेट, ई-मेल, फेसबुक इत्यादि से भी पूर्ण अवकाश ले लिया था। मोबाईल को अपने से दूर तो नहीं रख सका पर उसका उपयोग न्यूनतम रखा। सन्त अगस्ताइन ने बिल्कुल सही कहा है कि विश्व एक पुस्तक है और यात्रा न करने वाले उसका मात्र एक पृष्ठ पढ़ते हैं।

- भूतपूर्व मुख्य सतर्कता अधिकारी

हिंदी की लोकप्रियता में उसके वैश्विक रूप का योगदान

डॉ. कुलवन्त सिंह शेहरी

भाषा का स्वरूप बड़ा व्यापक होता है। बोलचाल के समय कई भाषाएँ इतनी मिल जाती हैं कि न बोलने वाले को और न सुनने वाले को ही ये अहसास होता है कि एक साथ कितनी भाषाएँ चल रही हैं। हिंदी भाषा की ये बहुत बड़ी विशेषता है कि ये बहुत जल्दी अनेक भाषा के शब्दों को इतना अधिक आत्मसात कर लेती है कि इन बाहरी शब्दों को यदि निकाल दिया जाये तो भाषा का प्रवाह और प्रभाव दोनों ही बदल जाते हैं। यही हाल उर्दू, पंजाबी और कुछ हद तक अंग्रेज़ी में भी है। जी हाँ, अंग्रेज़ी बोलने वाले फ़ौजियों की कभी बातचीत सुनें तो आप पायेंगे कि इतनी अंग्रेज़ी में भी लगभग एक तिहाई शब्द हिंदी, पंजाबी या अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के हैं। ये बाहरी शब्द अंग्रेज़ी में इतने रम गये हैं कि इनके बिना बातचीत का आनंद ही नहीं रह जाता। ''यार'', ''पक्का'' जैसे हिंदी के शब्द अंग्रेज़ी में रम चुके हैं। ऐसे ही हिंदी बोलते समय रेलगाड़ी, डाक, टेलर, होटल, स्टेशन, ब्यूटी पार्लर आदि शब्द अत्यंत घुले-मिले शब्दों के कुछ उदाहरण है। खेलों की बात करें तो लगभग अधिकांश अंग्रेज़ी के शब्द अब हिंदी में रम कर हिंदी के ही हो चुके हैं। पिच, बॉल, बैटिंग, ड्रिबलिंग, गोल, फुटबॉल जैसे शब्द अब दूर-दराज गाँवों में भी बोले और समझे जाते हैं। हिंदी का समाचार-पत्र पढ़ें या कोई मल्टीनेशनल चैनल पर हिंदी का समाचार सुनें तो हम पायेंगे कि इनके द्वारा बोले जाने वाली हिंदी अब सार्वभौमिक हिंदी हो चुकी है।

हिंदी के शब्द ही नहीं अंग्रेज़ी शब्दों के संक्षिप्त रूप भी हिंदी में अत्यंत लोकप्रिय हो चुके हैं। ''मार्केट चलना है'' कहने पर एकदम बाज़ार जाकर खरीदारी करने का भाव प्रकट होता है। आजकल शॉपिंग, मार्निंग वॉक, प्रॉब्लम आदि शब्द थोड़े क्लिष्ट होकर भी हिंदी भाषी लोगों के द्वारा अपनाकर उपयोग में लाये जा रहे हैं।

हिंदी भाषा में उर्दू, फ़ारसी, पंजाबी, मराठी आदि भाषाओं के शब्द भी इतने मिल गये है कि हम अब इनको अलग नहीं कर सकते। हिंदी के जानकार लोग जानते हैं कि यदि हिंदी का एक वाक्य लिखा जाये तो उसमें एक-दो शब्द विदेशी भाषाओं के जरूर मिल जायेंगे। कागज़, छूरी, कैंची, सब्जी आदि तरी, चपाती, बाटली, मेज़, दराज़, रवानगी, आमद, रोजनामचा, जांच, वकील, मुकदमा, गाली-गलौच, प्यार, मोहब्बत, शादी, तलाक, आराम, तालाब, पानी, बरसात, सर्दी, खुश्की, खुराक, दवाई आदि शब्द अंग्रेज़ी के नहीं है। ये हिंदी के भी नहीं है। कागज़ फारसी का है तो तालाब उर्दू का, वकील अरबी का है तो रोजनामचा पश्तो भाषा के हैं लेकिन क्या मजाल कि कोई भी हिंदी बोलने वाला इनको समझने में देरी कर दे। मुकदमे को ''वाद'' बोलने पर शंका हो सकती है लेकिन ''मुकदमा'' सभी जानते हैं और समझते भी हैं। दूर-दराज़ गाँव में रहने वाला अनपढ़ ग्रामीण भी वकील शब्द से परिचित है। अधिवक्ता या न्यायविद् जैसे शब्द उनके लिए समझ के बाहर है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के मल्टीनेशनल चैनलों में हिंदी का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। इन चैनलों पर दिखाए जा रहे समाचारों ने हिंदी भाषा के शब्दों को एक नया वैश्विक रूप दिया है। हिंदी का ये नया वैश्विक रूप आम जनता के द्वारा बड़ी गर्मजोशी से अपनाया गया है क्योंकि दूरदर्शन के माध्यम से ये ख़बरें घर पर से देखी जा रही है। जाने-अनजाने में इन चैनलों ने हिंदी का बहुत भला किया है। आज कुछ चैनल तो 24 घंटे समाचार दिखा रहे हैं। इन समाचारों में हिंदी के साथ अन्य भाषाओं के लोकप्रिय शब्द ज्यों के त्यों ले लिये जाते हैं।

हिंदी भाषा विश्व की प्रथम तीन भाषाओं में स्थान रखती है। हिंदी में साहित्यिक और संस्कृत के शब्दों के बाहुल्य वाला स्वरूप तो केवल भारत में ही दिखता है। पर हिंदी में अन्य भाषाओं की मिलावट वाला वैश्विक स्वरूप हर जगह मिल जायेगा और कई बाहर के मुल्कों में भी सुनने को मिल जायेगा। पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बंगलादेश, मॉरिशस और अरब देशों आदि में हिंदी के इस बदले हुए स्वरूप से हिंदी का कोई नुकसान नहीं हुआ बल्कि इससे हिंदी भाषा की लोकप्रियता बढ़ी है। हिंदी का आधार बढ़ा है। अब समय आ गया है। जब हमें हिंदी की भलाई के लिए इसके बदले स्वरूप को व्यापक रूप में अपनाकर इसे प्रचारित करना चाहिए। कठिन और संस्कृतजन्य भाषा को साहित्य में भले ही पूरा सम्मान दिया जाये पर बोलचाल की भाषा में इसका मिश्रित स्वरूप ही इसे और लोकप्रिय बनायेगा।

- (सेवानिवृत्त) राजभाषा अधिकारी

समय का सदुपयोग

- हरीश कुमार सहगल

समय, सफ़लता की कुंजी है। ऐसा अक्सर सुननें-पढ़ने को मिलता है। समय का चक्र अपनी गति से चल रहा है, या यूँ कहें कि भाग रहा है। वक़्त का पहिया घूमे रे भैया, चलता अपनी चाल से यूँ भी गुनगुना देते हैं। परंतु क्या हम समय के साथ कदम से कदम मिला कर चल पाते हैं? उसकी महत्ता को समझ पाते हैं? समय मूल्यवान हैं। समय अपने अंदर बहुमूल्य संपदा समेटे हुए है। काश! हम समय के महत्व को समझ पाते। यदि हमें कोई कहता है कि आप हमारे यहाँ आइए, तो एक कूट सा उत्तर देते हैं। क्या करें? समय ही नहीं है। कई बार हम अपना बहुमूल्य समय व्यर्थ के कामों में नष्ट कर देते हैं।

विकास करने के लिए समय का सदुपयोग अति आवश्यक है। क्योंकि यदि हम समय अनावश्यक कार्य में बर्बाद कर देते हैं तो उसकी प्रतिपूर्ति कभी नहीं होती। जिस प्रकार मुँह से निकले शब्द, तीर से निकला बाण वापिस नहीं आता उसी प्रकार बीता हुआ समय भी वापिस नहीं आता। संत कबीर ने समय की महत्ता समझाते हुए कहा था कि :

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में प्रलय होयेगी, बहुरी करेगा कब।।

हमें इससे शिक्षा लेते हुए यह प्रण लेना चाहिए कि आज का काम कल पर और कल का काम परसों पर नहीं टालना चाहिए।

कार्य टालने से हमें कार्य में रुचि नहीं रहती। जिस तरह बासी भोजन में उतना स्वाद नहीं रहता जितना ताज़े भोजन में था। वह उतना स्वादिष्ट नहीं लगता। उसी तरह आज काम अभी कर डालो। परिणाम अच्छे होंगे। समय अपनी गति से चलता रहता है। वह थकता नहीं। इसलिए इसे जाना नहीं जा सकता। बल्कि सदुपयोग न करने से नष्ट हो जाता है। और हम उस सुख से वंचित हो जाते हैं जो हमें समय का सदुपयोग करके मिलने वाला था। यह बात हम लोगों को समझ में नहीं आती।

कुछ जाने-माने अर्थ शास्त्रियों/व्यक्तियों ने इस बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि "जो व्यक्ति जीवन में समय का ध्यान नहीं रखता, उसके हाथ असफ़लता और पछतावा ही लगता है।"

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर समय के बड़े पाबंद थे। जब वे कॉलेज जाते तो रास्ते में दुकानदार अपनी घड़ियाँ उन्हें देखकर ठीक करते थे। हैरियत बीचर स्टो ने कार्य करते-करते गुलाम प्रथा के विरुद्ध आग उगलने वाली पुस्तक "टॉम काका की कुटिया" लिखी जिसे बहुत सराहना मिली। उपरोक्त दिए गए हवालों का निचोड़ यही निकलता है कि समय का सदुपयोग करने वालों की कभी हार नहीं होती। वह नए-नए कीर्तिमान स्थापित कर सकते हैं। इतिहास के पन्नों में अपना स्थान बना सकते हैं। ज़रूरत है तो सिर्फ़ समय का सदुपयोग करने की। उसके महत्व को समझने की।

सभी व्यक्तियों के पास समय समान होता है। यह हम पर निर्भर करता है कि हम किस तरह समय का विभाजन कर उसका सदुपयोग करते हैं। प्रकृति इसका जीता-जागता उदाहरण है - निश्चित समय पर ऋतुओं का आना, दिन-रात का होना आदि। अगर इसमें कहीं भी अनियमितता होती है तो विनाश लीला प्रारंभ हो जाती है। इतिहास भी इस बात का गवाह है कि समय की उपेक्षा करना कभी-कभी कितना भारी पड़ता है। नेपोलियन ने आस्ट्रिया को इसलिए हरा दिया कि वहाँ के सैनिकों ने 5 मिनट का विलंब कर दिया था, लेकिन वहीं कुछ ही मिनटों में नेपोलियन को बंदी बना लिया गया क्योंकि उसका एक सेनापति कुछ विलंब से आया था। वाटर लू के युद्ध में नेपोलियन की हार का सबसे बड़ा कारण समय की अवेहलना ही थी।

उक्त व्याख्या को देखते हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि खोई हुई दौलत कमाई जा सकती है, भूली हुई विद्या पुनः प्राप्त की जा सकती है। परंतु बीता हुआ समय/खोया हुआ समय कभी वापिस नहीं आ सकता। हम सिर्फ़ हाथ मलते रह जाते हैं। अर्थात् पश्चाताप की अग्नि में जलते हैं। एक असफ़ल विद्यार्थी परीक्षा-फल देख कर अवश्य सोचता है कि काश! मैनें समय रहते मेहनत कर ली होती तो आज मैं भी प्रथम आ गया होता।

मेरा 10वीं व 12वीं के विद्यार्थियों से भी अनुरोध है कि वह समय को ध्यान में रखते हुए अपनी पढ़ाई करें। सफ़लता उनके कदम चूमेगी। क्योंकि समय के गर्भ में सफ़लताओं का भंडार है। मनुष्य कितना भी परिश्रमी क्यों न हो परंतु समय पर कार्य न करने से उसकी मेहनत बेकार चली जाती है।

जब हम फसल बोते हैं तो उसका भी एक समय है असमय बोया हुआ बीज फल नहीं देता। कभी-कभी समय बेकार नहीं करना चाहिए न मालूम कौन सा समय हमें हमारे लक्ष्य तक पहुँचा दें। समय किसी का इंतज़ार नहीं करता इसलिए समय रहते ही कार्य करना श्रेयस्कर है।

- अ.प्र. नि. कार्यालय, नई दिल्ली

बैंक की गृह-पत्रिका 'पीएसबी राजभाषा अंकुर' के दिसम्बर, 2013 अंक का विमोचन

श्री डी. पी. सिंह, आई.ए.एस., अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, बैंक की गृह-पत्रिका 'पीएसबी राजभाषा अंकुर' के दिसम्बर, 2013 अंक का विमोचन करते हुए।

श्री डी. पी. सिंह, आई.ए.एस., अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक कार्यकारी निदेशक श्री मुकेश कुमार जैन दाएं एवं श्री किशोर कुमार सांसी बाएं एवं महाप्रबंधक श्री आर. सी. नारायण को पत्रिका विमोचन उपरांत पत्रिका की प्रतियाँ भेंट करते हुए।

पत्रिका विमोचन उपरांत पत्रिका के नए अंक की प्रतियाँ दर्शाते श्री डी. पी. सिंह, आई.ए.एस., अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, कार्यकारी निदेशक एवं अन्य उच्चाधिकारीगण।

पत्रिका विमोचन कार्यक्रम उपरांत मिष्ठान ग्रहण करते हुए उच्चाधिकारीगण।

बैंक की गृह-पत्रिका के नए अंक के लिए शुभकामनाएं अंकित करते हुए श्री डी. पी. सिंह, आई.ए.एस., अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक।

कार्यकारी निदेशक महोदय का आंचलिक कार्यालय कोलकाता का दौरा

श्री किशोर कुमार साँसी, कार्यकारी निदेशक के आंचलिक कार्यालय में आगमन पर स्वागत करते हुए श्री जी. एस. कोहली, मुख्य प्रबंधक, आंचलिक कार्यालय कोलकाता।

श्री जी. एस. सेठी, फ़ील्ड महाप्रबंधक के आंचलिक कार्यालय में आगमन पर स्वागत करते हुए बैंक अधिकारी।

श्री किशोर कुमार साँसी, कार्यकारी निदेशक, श्री जी. एस. सेठी, फील्ड महाप्रबंधक एवं ए. के. सिन्हा, आंचलिक प्रबंधक, कोलकाता, शाखा प्रबंधकों की मीटिंग को संबोधित करते हुए।

श्री किशोर कुमार साँसी, कार्यकारी निदेशक, आंचलिक कार्यालय कोलकाता के अंतर्गत आने वाली शाखाओं की समीक्षा करते हुए।

श्री किशोर कुमार साँसी, कार्यकारी निदेशक, आई.बी.डी. कोलकाता शाखा के निरीक्षण के दौरान शाखा की सुरक्षा प्रणाली के तहत स्ट्रांग रूम का निरीक्षण करते हुए।

श्री किशोर कुमार साँसी, कार्यकारी निदेशक, आई.बी.डी. कोलकाता शाखा के कार्मिकों के साथ बैंक की कार्य-प्रणाली व प्रदत्त सुविधाओं का विश्लेषण करते हुए।

पी.एस.बी. ग्रामीण स्व-रोज़
द्वारा आयोजित वि

गार प्रशिक्षण संस्थान, मोगा
भिन्न ऋण-शिविर

प्र.का. राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित

श्री दीपक धीमन, स्टेट एडीटर 'दैनिक भास्कर' का पुष्प-गुच्छ से स्वागत करते हुए स्थानीय प्रधान कार्यालय चंडीगढ़ के महाप्रबंधक श्री इकबाल सिंह भाटिया।

श्री अमरजीत बट्टु, सचिव चंडीगढ़ नराकास का पुष्प-गुच्छ से स्वागत करते हुए श्री आर. सी. नारायण, महाप्रबंधक (राजभाषा)।

दीप प्रज्वलन

18वां अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

मुख्य अतिथि का उद्बोधन।

महाप्रबंधक (राजभाषा) का संबोधन।

डॉ. चरनजीत सिंह, प्रभारी व मुख्य प्रबंधक तथा श्री के. एस. खुराना, वरिष्ठ प्रबंधक का उपस्थित राजभाषा अधिकारियों को संबोधन।

उपस्थित राजभाषा अधिकारियों का ग्रुप छाया-चित्र।

श्री एस. पी. एस. कलसी प्रधानाचार्य सी.बी.आर.टी., चण्डीगढ़ धन्यवाद ज्ञापित करते हुए।

बैंक नराकास, दिल्ली की 39वीं बैठक के आयोजन एवं नराकास के तत्वावधान में

बैंक नराकास, दिल्ली द्वारा नराकास की 39वीं बैठक के आयोजन अवसर पर मंचासीन समिति सदस्य।

बैठक आयोजन के दौरान श्री आर. सी. नारायण, महाप्रबंधक (राजभाषा) का स्वागत करते हुए श्री लाल प्रसाद, सचिव, बैंक नराकास, दिल्ली।

मुख्य अतिथि के रूप में पधारे श्री शैलेश कुमार, उप निदेशक (कार्यान्वयन) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, उत्तरी दिल्ली, बैठक में उपस्थित बैंक अधिकारियों को संबोधित करते हुए।

बैठक में उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों एवं बैंक अधिकारियों को संबोधित करते हुए श्री आर. सी. नारायण, महाप्रबंधक, राजभाषा।

बैंक नराकास, दिल्ली द्वारा आयोजित 'राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता' में बैंक को प्राप्त हुए प्रोत्साहन पुरस्कार के रूप में शील्ड ग्रहण व प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए दाएं श्री आर. सी. नारायण, महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं बाएं श्री के. एस. खुराना, वरिष्ठ प्रबंधक।

बैंक नराकास, दिल्ली के तत्वावधान में विभिन्न बैंकों द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में एक साथ प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार स्वरूप प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए बैंक के प्रधान कार्यालय में कार्यरत श्री अजय अरोड़ा वरिष्ठ प्रबंधक, जोखिम प्रबंधन विभाग।

आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण की झलकियाँ

बैंक नराकास, दिल्ली के तत्वावधान में 'इंडियन ओवरसीज़ बैंक' द्वारा आयोजित 'स्वरचित हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता' में तृतीय पुरस्कार स्वरूप प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए हमारे बैंक की एक परिवीक्षाधीन अधिकारी सुश्री नेहा कुमारी।

बैंक नराकास, दिल्ली के तत्वावधान में 'स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर' द्वारा आयोजित 'हिंदी-चित्र कविता लेखन' प्रतियोगिता में प्राप्त प्रोत्साहन पुरस्कार स्वरूप प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए बैंक के प्रधान कार्यालय में कार्यरत श्री रविन्द्र परमार, प्रबंधक (अग्रिम)।

बैंक नराकास, दिल्ली के तत्वावधान में हमारे बैंक द्वारा आयोजित 'समाचार-वाचन प्रतियोगिता' में प्रथम पुरस्कार स्वरूप प्रमाण-पत्र प्राप्त करती हुई विजया बैंक की एक अधिकारी श्रीमती अर्चना सिंह।

बैंक नराकास, दिल्ली के तत्वावधान में हमारे बैंक द्वारा आयोजित 'समाचार-वाचन प्रतियोगिता' में प्राप्त द्वितीय पुरस्कार स्वरूप प्रमाण-पत्र प्राप्त करती हुई हमारे बैंक की एक परिवीक्षाधीन अधिकारी सुश्री निधि।

बैंक नराकास, दिल्ली के तत्वावधान में हमारे बैंक द्वारा आयोजित 'समाचार-वाचन प्रतियोगिता' में प्राप्त तृतीय पुरस्कार स्वरूप प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए 'स्टेट बैंक ऑफ इंडिया' की एक अधिकारी 'श्रीमती कविता सहरावत'।

बैंक नराकास, दिल्ली के तत्वावधान में हमारे बैंक द्वारा आयोजित 'समाचार-वाचन प्रतियोगिता' में प्राप्त प्रोत्साहन पुरस्कार स्वरूप प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए 'यूनियन बैंक ऑफ इंडिया' की एक अधिकारी श्रीमती कल्पना खरे।

जन्म-दिन की घंटी

नीलम मल्होत्रा

हर स्कूल में एक न एक अध्यापक अवश्य उस प्रजाति का पाया जाता है जो केवल अपने गुस्से के लिए ही मशहूर होता है। बच्चों को डांट लगाने का तो उनको एक शौक सा ही होता है। वे चाहते हैं कि स्कूल का हर एक बच्चा ही नहीं बल्कि अध्यापक गण भी ऐसे काम करें जैसा वे चाहते हैं। ऐसे अध्यापकों पर ईश्वर की कृपा तो इतनी होती है कि वे प्रिंसीपल के सामने अपने आपको एक आदर्श अध्यापक साबित करने में हमेशा सफ़ल रहते हैं। ऐसी ही एक अध्यापिका थी रिंकी के स्कूल में। जो अपनी खूंखार प्रजाति का नाम रोशन करने का कोई अवसर नहीं छोड़ती थीं। उनका नाम था श्रीमती स्नेहलता। वैसे आप इनके नाम पर मत जाइये। इनके नाम से तो इतना स्नेह झलकता था कि माँ की ममता भी फ़ीकी पड़ जाये। परंतु वास्तव में ये एक ऐसा नाम था जिसको सुनते ही बच्चे काँपने लगते। बच्चे उन्हें देखकर ऐसे डरते थे जैसे उन्हें डायनासोर के सामने खड़ा कर दिया गया हो। जब दूर देश में कोई बच्चा न सोए और गब्बर का नाम लिया जाए तो एक बार कहा जा सकता है कि बच्चा नहीं डरा, मगर स्कूल में ऐसा कोई बच्चा नहीं था जो स्नेहलता मैडम का नाम लेने के बाद न केवल काम करना शुरू कर देगा बल्कि वह क़िताब को तब तक नहीं छोड़ेगा जब तक कोई यह नहीं कह दे कि मैडम चली गई हैं।

मैडम स्कूल में जहाँ से भी गुजरतीं वहाँ हमेशा बच्चे कक्षा में पढ़ते दिखाई देते। उनकी एक ख़ास आदत यह भी थी कि वे अपने सामने और किसी की बात नहीं सुनती थीं उन्होंने जो कहा वो अगर सामने वाला न माने तो समझो उसकी ख़ैर नहीं।

एक बार की बात थी जब एक लड़की को काम न करने के कारण मैडम ने प्रिंसीपल के कमरे के बाहर खड़ा कर दिया था। रिंकी की एक सहेली प्रिंसीपल के कमरे में जाने से पहले उस लड़की से पूछने लगी कि कमरे में प्रिंसीपल मैडम हैं या नहीं। तो स्नेहलता मैडम ने उसे देख लिया तथा उन्हें ऐसा लगा जैसे वह लड़की बातें करने के लिए आई है तो उन्होंने दोनों को ही सज़ा दे दी।

ऐसे ही एक बार रिंकी की क्लास की एक लड़की की तबीयत ख़राब हो गई तो रिंकी उसको पानी पिलाने गई परंतु मैडम ने उसे यह कहकर वहाँ से भगा दिया - "बेटा! मैं जानती हूँ तुम यहाँ मस्ती करने आए हो। अपनी कक्षा में जाओ। अगर उस लड़की को पानी पीना होगा तो वह अपने आप पी लेगी। अब आप ही बताईये कि वह बेचारी लड़की सिक-रूम में पड़ी पानी कहाँ से लाएगी?अब स्नेहलता मैडम को कौन समझाए? उन्हें समझाने से बेहतर होगा कि रिंकी ख़ुद ही यह मान ले कि वह मस्ती करने ही गई थी।

घबराईये नहीं। स्नेहलता मैडम रूपी विलेन के लिए रिंकी की क्लास में एक हीरो भी था और वह हीरो था अलीशा। अलीशा एक ऐसे शख़्स का नाम था जो पढ़ाई में अव्वल, आत्म-विश्वास से परिपूर्ण, किसी से न डरने वाली लड़की थी। वह पूरे स्कूल में एक ऐसी लड़की थी जो स्नेहलता मैडम से नहीं डरती थी। उसने यह ठान रखा था कि डांट और सज़ा केवल तभी लेगी जब वह ख़ुद ग़लत हो, नहीं तो वह अपनी बात पर अड़ी रहती थी।

विपरीत दृष्टिकोण के कारण स्नेहलता मैडम और अलीशा न जाने कितनी बार लड़ी होंगी। परंतु दोनों एक दूसरे का डटकर मुकाबला करती थीं और दोनों में से कोई भी हार नहीं मानती थीं। इन सब के पीछे एक कारण यह भी था कि प्रिंसीपल मैडम की नज़र में बच्चों में अलीशा की तथा अध्यापकों में स्नेहलता मैडम की छवि बहुत अच्छी थी।

रोज़ाना की तरह एक बार रिंकी जब स्कूल पहुँची तो पूरे स्कूल में एक अफ़वाह फैली थी कि स्नेहलता मैडम ने नया फ़ोन लिया है। हर बच्चे की ज़ुबान पर बस यही बात थी। जब स्नेहलता मैडम कक्षा में आई तो यह साबित हो गया कि मैडम ने वाकई नया फ़ोन लिया है। वे बार-बार अपने पर्स से फ़ोन निकालकर उसे देखती जिसे देखकर ऐसा लगता कि वे हमें अपना फ़ोन दिखाने की कोशिश कर रही हों।

अचानक एक छात्रा कक्षा में आई और कहने लगी-मैडम आपको प्रिंसीपल मैडम ने बुलाया है। मैडम भी तुरंत चली गई और अपना फ़ोन और पर्स वहीं कक्षा में ही छोड़ गई। रिंकी और सभी बच्चे भी बातों में लग गए तथा किसी का भी ध्यान फ़ोन पर नहीं गया। थोड़ी देर में मैडम वापिस कक्षा में आई तथा अपना पर्स खोलकर अपना फ़ोन देखने लगी। पर ये क्या! मैडम का फ़ोन गायब। स्नेहलता मैडम का फ़ोन चोरी हो गया। मैडम हम सब पर चीखने लगी और पूछने लगी - "मेरा फ़ोन कहाँ है?किसने लिया मेरा फ़ोन?" ऐसा सवाल जिसका उत्तर कोई

जानता भी हो तो क्यों देगा। यदि कोई फोन लेगा भी तो स्वयं क्यों बताएगा?मैडम गुस्से में आग बबूला हो गई। तिलमिला उठी। उन्होंने पूरी कक्षा के सब बच्चों के बस्ते, सभी अलमारियों, हर जगह ढूंढ़ा, कहीं कुछ न मिला। मैडम के चेहरे पर पहली बार गुस्से के साथ-साथ डर तथा खो जाने का गम दिख रहा था। फिर मैडम ने पूछा किसी और कक्षा का कोई बच्चा आया था क्या? जैसे कोई बच्चा फ़ोन चोरी करने के लिए सीना चौड़ा करके कक्षा में आएगा और सबको अपना होने का अहसास दिलाकर जाएगा।

फिर मैडम का गुस्सा डर में बदल गया और वह प्रार्थना करने लगी - ''अगर किसी बच्चे ने फ़ोन लिया हो तो कृपया वापिस कर दे, मैं कुछ भी नहीं कहूंगी। बल्कि सच बोलने का इनाम भी दूंगी।'' रिंकी की कक्षा के बच्चे सोचने लगे अब हम इतने छोटे तो हैं नहीं कि ऐसी बातों से पिघलने लगें बल्कि सब जानते थे कि इनाम तो बहाना है असल में तो मार मिलेगी। सब शांत थे, मैडम की डरी हुई शक्ल देख रहे थे और मज़ा ले रहे थे, केवल अलीशा ही मुँह नीचे करके पढ़ रही थी। बस फिर क्या था, मैडम का शक़ यक़ीन में बदलने लगा कि अलीशा ने ही मैडम को परेशान करने के लिए फ़ोन चुराया है, क्योंकि मैडम को कभी भी शक़ नहीं होता अगर होता है तो केवल यक़ीन। मैडम ज़ोर से बोली, ''अलीशा''। अलीशा अचानक अपना नाम सुनकर हैरान हो गई और खड़ी होकर बोली - ''जी मैडम''। मैडम ने तुरंत कह डाला ''मै जानती हूँ, तुम मुझे पसंद नहीं करती और मुझे परेशान करने के लिए कुछ भी कर सकती हो और अब मुझे यह भी पता चल गया है कि मेरा फ़ोन तुमने ही चुराया है। अचानक स्वयं पर लगते इल्ज़ाम को सुन अलीशा हक्की-बक्की रह गई और वह डरती हुई बोली, ''मैडम! आप यह क्या कह रही हैं?''अलीशा'' अंजान न बनो मुझे सब पता है। मैडम ने तुरंत कहा। तभी मैडम की एक चमची खड़ी होकर बोली-''जी मैडम, जब आप प्रिंसीपल मैडम के पास गई थी तो अलीशा को मैंने आपके मेज़ की ओर तथा फिर बाहर जाते देखा था। अलीशा और ज़्यादा घबरा गई। उस पर मैडम का गुस्सा तथा यक़ीन बढ़ने लगा, वह बोली ''अलीशा'' क्या यह सच है?''जी मैडम'' पर..., पर क्या?अलीशा मैं जानती हूँ कि तुमने ही यह सब किया है, पर मैंने कभी सोचा न था कि तुम ऐसा भी कर सकती हो। ''पर मैडम मैंने आपका फ़ोन नहीं लिया''। ''तो तुम कहाँ गई थी?'' अलीशा ने कहा-''अपनी बहन सिमरन के पास। पर स्नेहलता मैडम भी किसी की बात कहाँ मानने वाली थी। उन्होंने सिमरन को तुरंत बुला भेजा। और उससे पूछने लगी-''क्या अलीशा तुम्हारे पास गई थी?'' पर सिमरन के उत्तर ने सबको हैरान कर दिया। वह बोली ''नहीं मैडम''। ये क्या?अलीशा ने झूठ बोला। क्या कारण हो सकता है?क्या सच में अलीशा ने.....?नहीं, वह ऐसा नहीं कर सकती। हज़ारों सवाल जिनका उत्तर केवल अलीशा ही जानती थी। मैडम ने अलीशा से कहा - ''अब क्या होगा, ''अलीशा''। अलीशा के मुँह पर चुप्पी थी वह आज अपना बचाव नहीं कर रही थी। क्या इसका मतलब यह है कि वह गलत थी?मैडम का गुस्सा काबू से बाहर हो गया। वह अलीशा को मारने के लिए जैसे ही आगे बढ़ी। पीछे से स्नेहलता मैडम के फ़ोन बजने की आवाज़ आई। मैडम का हाथ रुक गया। सब हैरान थे, कि क्या किसी ने फ़ोन चुराकर कक्षा में ही रख दिया है?पर फ़ोन है कहाँ। मैडम आगे बढ़ी तो देखा आवाज़ उनके पर्स में से आ रही थी। ये क्या?फ़ोन मैडम के पर्स में! तो फ़ोन मैडम के पर्स में ही था और वे बेवज़ह अलीशा पर भड़क रही थी। स्नेहलता मैडम ने हिचकिचाते हुए फ़ोन उठाया तथा बात करके जब वापिस आई तो देखा। अलीशा अभी भी वहीं अपनी सीट पर खड़ी थी तथा उसकी आँखें नम थी। अलीशा रो रही थी। स्नेहलता मैडम ने पहली बार किसी पर अपने अपार स्नेह की वर्षा की। सब हो जाने के बाद दोनों कक्षा में आए। अलीशा अपनी सीट पर बैठी। अब केवल एक सवाल सबके मन में था ''अलीशा गई कहाँ थी तथा उसने झूठ क्यों बोला। मैडम ने उससे यह पूछ ही लिया तो उसने बहुत कहने पर कहा - ''मैडम आप किसी से फ़ोन पर बात कर रही थी तो मैंने सुन लिया था कि आज आपका जन्म-दिन है और मैं आपके लिए कैंटीन से चॉकलेट लेने गई थी। ''जन्म-दिन मुबारक हो, मैडम।''

- प्र.का., आई.टी. विभाग, नई दिल्ली

माँ

पी. एस. सोढी

माँ चाहे परमात्मा की लहू-मांस और हड्डियों की एक छोटी सी रचना है, पर परमात्मा ने माँ को इतने अधिक गुणों से भरपूर कर दिया कि माँ का रिश्ता दुनिया के सब रिश्तों से ऊँचा हो गया। दुनिया ने औरत की समय-समय पर अलग-अलग तरीके से भले ही निंदा की हो पर माँ के इस पाक-पवित्र रिश्ते के ख़िलाफ़ आज तक किसी कट्टर से कट्टरपंथी, ज़ालिम से ज़ालिम तानाशाह, बादशाह, शहंशाह, बली से महाबली योद्धाओं या फिर किसी पीर, फ़कीर ने एक शब्द भी नहीं कहा।

माँ सचमुच परमात्मा का ही रूप है। अगर कहीं स्वर्ग है तो वो सिर्फ़ माँ के पैरों में है। किसी शायर ने ठीक ही कहा है :

''माँ जैसा पौधा देता सुखद हवाएं, श्रवण पुत्र जैसा बेटा जन्में सारी माएं''।

दुनिया की तमाम खुशियाँ एक बारी प्यार से ''माँ'' कहने भर से मिल जाती है। नादिरशाह ने माँ के बारे में कहा था - मुझे माँ और फूल में कोई अंतर नज़र नहीं आता।'' बादशाह औरंगजेब ने अपनी माँ से बिछुड़ने पर कहा था - ''माँ के बिना मुझे घर किसी कब्रिस्तान सा लगता है।'' माँ शब्द मुँह में आते ही मुँह शहद जैसी मिठास से भर जाता है। वास्तव में माँ शब्द मोह से भरी रूह का नाम है। माँ मनुष्यता को परमात्मा की दी हुई सबसे अनमोल सौगात है। माँ कुर्बानी का एक मुजस्समा है, त्याग की मूर्ति है, ममता का सागर है। कल्पतरू की छाँव है, युगों का इतिहास है, बरकतों का दामन है, पाकीज़गी का ख़ज़ाना है, माँ खुशियों का स्रोत है - सच तो ये है कि माँ प्रकृति की अनुपम, अद्वितीय देन है।

माँ के सुखद स्पर्श के बिना सारा आलम फीका है, खाली है, खोखला है, अर्थहीन है, नीरस है, रूखा है।

माँ चाहे सृजक है, चाहे जन्मदाती है, वह कुदरत का असीम करिश्मा है, दुनिया की हर चीज़ का कुछ पर्याय तो हो सकता है पर माँ का पर्याय कहीं नहीं, कोई नहीं। लोरी सिर्फ़ माँ ही सुना सकती है। एक माँ ही है जिसकी छाती में बच्चे को जन्म लेने से कुछ पल पहले ही अमृतमयी दूध उतर आता है, ऐसा अमृत जो गुणों से भरपूर तो है ही साथ ही बच्चे को सब बीमारियों से मुक्त रखने की क्षमता भी रखता है।

किसी पंजाबी शायर ने माँ के बारे में क्या खूब कहा है

''ओत्थे कम्म की किकरां टाहलीयाँ दा
जित्थे बोहड़ दी संघंड़ी छां होवे
ओहने तीरथी जा के की लैणै
जिहदे घर विच्च अपणी माँ होवे।''

माँ की खुशी में ही खुशी है। घर का सारा माहौल खुशनुमा हो जाता है। जहाँ-जहाँ भी माँ के मुबारक कदम पड़ते हैं वहीं सारी कायनात खुशनुमा हो जाती है।

जितना आदर भरा, बड़ा और महान, ''माँ '' लफ़्ज़ है उतने ही अनगिनत माँ के नाम के संबोधन भी हैं - कोई माँ को मम्मी, मामा, अम्मी, अंबड़ी, अंबो, अम्मा कह के बुलाता है तो कोई बीबी, बेबे, आई, माता, माई कह के बुलाता है और कोई मदर, मादर.... उस तरह माँ के संबोधन अनेकानेक है। माँ को चाहे जिस किसी नाम से भी पुकारो, माँ शब्द शहद सा मीठा है। माँ के रोम-रोम में ममता, मोह और मिठास है, अपनत्व है, ताज़गी है उष्मता है। माँ का नाम हमारी रूह को सुकून, जिस्म को ताज़गी और मन को प्रफुल्लता से भर देता है। माँ की गोद में जो आनंद, उष्मता और बेफ़िक्री है वो संसार में और किसी जगह पर नहीं। माँ के आंचल में जो वफ़ा इंसान को मिलती है उसके सामने दुनिया के तमाम रिश्तों की वफ़ा तुच्छ है। माँ का रिश्ता-भाव उल्लास और उमंग भरा रिश्ता है। माँ जैसा सहारा कोई और नहीं। माँ संसार के किसी भी कोने में हो, जितनी भी बड़ी हो जाए, सारा वक़्त अपने कमरे में रहे, बिस्तर पर लेटी रहे सारा घर भरा-भरा सा लगता है। ऐसा लगता है जैसे माँ ने सारे घर की ज़िम्मेदारी अपने सिर पर उठा रखी हो।

माँ के प्यार में शक्ति है, असीम बल है जो बच्चे को ज़िंदगी में उसे 'कुछ' बनने के लिए प्रेरित करती है। माँ के आशीर्वाद में दुनिया के हर दुख से टक्कर लेने की ताकत होती है। माँ की डांट और झिड़कियों में अंतहीन प्यार छुपा होता है। माँ का प्यार झरने की तरह वेगवान है, जिसे अनुभव करने के लिए प्रयास नहीं करना पड़ता। माँ का प्यार आपने सब बच्चों के लिए बराबर होता है। वो अपना प्यार सब बच्चों मे इस तरह बाँटती है कि हर एक को हर वक़्त ये शत-प्रतिशत ही मिलता है। घर, ज़मीन और नकदी को बांटा जा सकता है, पर माँ के प्यार को नहीं। माँ जैसा हमदर्द पूरे जग में नहीं। हालांकि बहुत से विद्वान मानते हैं कि इंसान के मुँह से पहले ''ॐ'' निकलता है पर इतिहास गवाह है कि जब भी कोई मनुष्य किसी मुसीबत की घड़ी में होता है, किसी दुख, तक़लीफ से भरता है, उसके मुँह से जो पहला शब्द निकलता है वो ''ॐ'' नही, माँ होता है। जब कोई आदमी कहीं से हार कर, पराजित हो कर, निराश हो कर लौटता है तो आदमी को अपनी बाँहों में समेटने वाली माँ ही होती है, जिसकी छाती की उष्मा उसकी हार, निराशा उसकी पीड़ा, उसका दुःख हर लेती है। अगर वो कहीं सफल हो कर लौटता है, कहीं कोई कामयाबी उसके हाथ लगती है तो माँ जितना खुश कोई और नहीं होता, माँ तो उसकी खुशी को कई गुना बढ़ा देती है।

माँ ही तो है जो न केवल बच्चे को प्रसुति पीड़ा सह कर जन्म देती है बल्कि उसके चरित्र-निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ये माँ ही है जिसने बाबा फ़रीद को भक्ति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। ये माँ ही है जिसने राजे-महाराजे, पीर, फ़कीर, गुरुओं, बहादुरों, योद्धाओं, सूरबीरों, उच्च-कोटि के लेखकों, वैज्ञानिकों को जन्म दिया है। ये माँ ही है जिसे गुरु, पीर, फ़कीर, ओलिया, सजदा करते हैं।

माँ परमात्मा का वरदान है। माँ हमारी पहचान है। ये माँ ही है जो हमें जीवन जीने का सही तरीका बताती है। माँ जैसा मित्र कोई और नहीं। माँ हमें हर वक़्त हर आफ़त से बचाती है। माँ घंटों अपने बच्चों की प्रतीक्षा कर सकती है बिना किसी शिकवे-गिले से। ये माँ ही है, जो सारी रात लोरी दे सकती है, ये माँ ही है जो स्वयं, गीली जगह पर सो कर बच्चे को सूखी जगह पर सुलाती है। माँ ही है जो बच्चे को गोद में घंटों उठाए रह सकती है।

भगवान श्री कृष्ण की माँ यशोदा (देवकी) भगवान श्री रामचन्द्र जी की माँ कौशल्या या श्री गुरु नानक देव जी की माँ तृप्ता की कुर्बानी भावना को कौन नकार सकता है जिसने कई दशकों तक अपने लाडले को परदेस की राह पर भेज कर उनका विछोह सहा है और उनके परिवार की देखभाल की है। हज़रत ईसा की माँ मरियम के योगदान को कौन भुला सकता है। माता गुजरी जी ने मुगल सल्तनत के ज़ुल्मो-सितम की चरम सीमा को सहा और अपना सारा परिवार ख़ालसा पंथ पर कुर्बान कर दिया। माता साहिब देवा जिन्होंने अमृत में मीठे बताशे घोलकर युगों के लिए मिठास से भर दिया। माता जी की उस अनमोल रहनुमाई और कुर्बानी करके उनको खालसा की माँ के रूप में सम्मानित व स्मरण किया जाता है।

ये माँ ही है जो अपना सारा जीवन बच्चों की भलाई के लिए लगा देती है। किसी शायर ने क्या ख़ूब कहा है,

'माँ तो माँ है नही बेगानी,
माँ सा जग में न कोई सानी।''

दुःख व पीड़ा के समय बच्चे के मुहँ से, ''हाय माँ'' ही निकलता है। कहते हैं पिता बिना बच्चा आधा यतीम हो जाता है पर माँ बिना पिता और बच्चा दोनों यतीम हो जाते हैं। दरअसल परमात्मा के बाद आदमी किसी का देनदार है तो सिर्फ़ माँ का। ये माँ ही है जो अपने लहु-मांस और हड्डियाँ गला कर, दुख-तकलीफ़ें सह कर नन्हीं सी जान को नौ माह तक गर्भ में रखने के बाद, प्रसूति पीड़ा सहन कर बच्चे को जन्म देती है ये एक परमात्मा की तरह सृजनहार ही तो है।

सच तो ये है माँ असीम है, अनंत है, कुदरत के पसार की, कायनात की, ब्रह्मांड की सब से उत्तम पैदाइश है। माँ ईमान है। माँ का कोई पर्याय नहीं। माँ तो सिर्फ़ माँ है।

- सेवानिवृत्त, उप महाप्रबंधक

''भगवान की भक्ति करने से हमें चाहे माँ न मिले।
लेकिन माँ की भक्ति करने से हमें भगवान ज़रूर मिलेगा।''

गतिविधियाँ

सेंट्रल स्कूल पटना, बिहार ए.टी.एम. का उद्‌घाटन करते हुए श्री किशोर कुमार सॉंसी, कार्यकारी निदेशक।

बैंक नराकास, जालंधर के तत्वावधान में आंचलिक कार्यालय जालंधर के द्वारा दिनांक 27.12.2013 को शब्द-सुमेल प्रतियोगिता में आए सहभागियों को सम्बोधित करते हुए श्री जोगिन्दर सिंह कौड़ा, सहायक महाप्रबंधक एवं मंचासीन सुश्री हिना, राजभाषा अधिकारी।

आंचलिक कार्यालय अमृतसर में बैंक की ओर से आँखों का फ्री चेक-अप कैंप लगाया गया। कैंप में उपस्थित आंचलिक प्रबंधक श्री सुखविंदर सिंह बेदी एवं उपस्थित नेत्ररोगी आँखों का चेक-अप करवाते हुए।

सीबीआरटी, चंडीगढ़ द्वारा दिनांक 08.02.2014 को "राजभाषा प्रयोग-आपसी संवाद-सार्थक दिशा"पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर बाएं से दाएं नज़र आ रहे हैं श्रीमती इन्दरपाल कौर, व.प्र. (राजभाषा) श्री एस. पी. एस. कलसी, प्रधानाचार्य, श्री डी. के. सेठी, मुख्य प्रबंधक, प्र.का. आई.टी. विभाग तथा शाखा डालनवाला देहरादून से सहभागी श्री कपिल साहनी।

बैंक की निश्चिंतपुर शाखा में कार्यरत श्री नवीन कुमार राय, अधिकारी की सुपुत्री सुश्री स्वाति सुमन को वर्ष 2014 की गणतंत्र दिवस परेड में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया। इस परेड में पूरे भारत से विश्वविद्यालय/विद्यालय में टॉप करने वाले 100 छात्रों को आमंत्रित किया गया। पी.एस.बी. परिवार को आप पर गर्व है।

अधूरा मन

वी. एस. मिश्रा

कहानी या उपन्यास के अंतिम पृष्ठों पर नज़रें अक्सर गड़ जाती है, क्योंकि पाठक यह प्रयत्न करता है कि उपसंहार के मध्य में जो भाव प्रसंगवश छूट गए हों, उनकी क्षतिपूर्ति हो जाए। अक्सर कहानी की शुरूआत बड़ी दमदार होती है, लेकिन ढेर सारी घटनाओं, चरित्रों और कथोपकथन के क्रम में मध्यभाग थोड़ा सा नीरस हो जाता है, जबकि सही यह है कि मध्य भाग में ही कहानी अपनी ऊँचाइयों तक पहुँचती है, शेष अन्य हिस्से तो पहाड़ की ढाल की तरह तीखे ही होते हैं।

अनोखे लाल जी शायद अपने जीवन के अंतिम पड़ाव की प्रतीक्षा कर रहे थे और इसलिए उनके पास जो भी था, उन पर नज़रें जमाए हुए थे। औसत परिवार में जन्मे अनोखे लाल जी ने अपने साहस और दुःसाहस से इतना धन अर्जित कर लिया था कि अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य को सुखद जीवन का एहसास भी कराया और इस योग्य भी बनाया कि आगे की ऊँचाई भी प्राप्त की जा सके। कुल मिलाकर उन्हें संतुष्ट होना चाहिए था। परंतु आशा के विपरीत जीवन के अपराह्न में उनकी अधीरता और असंतुष्टि बढ़ गई थी और इसकी वजह थी उनकी नुक्ताचीनी और दखल, पारिवारिक मामलों में पूर्वापेक्षा बढ़ गया था। अपनी उपलब्धियों पर उनकी नज़रें गड़ गई थी उन उपलब्धियों के लिए उन्होंने जो कुछ झेला था, उसके लिए किए गए या सहे गए दुःखों के कारण उनकी खीज और भी तीव्र होती जा रही थी। परिवार का स्वरूप उन्होंने स्वयं बदला था, औसत मध्यमवर्गीय से उच्च मध्यवर्णीय और फिर धनाढ्य श्रेणी में आने के बाद जो पारिवारिक विकर्षण उत्पन्न हुआ, उसे उन्होंने संभाला नहीं और अब इस मोड़ पर चाहते थे कि परिवार में संबंधों की माधुर्य से अपने वार्धक्य को शिथिल करें। जबकि धन उनके परिवार के हर सदस्य को अलग-अलग दिशा में खींचता था और इसका परिणाम यह था कि इस अवस्था में अनोखे लाल जी को पारिवारिक सूनापन कष्ट देता था। इस स्थिति के लिए कौन-कौन सी बातें उत्तरदायी थीं, का विश्लेषण ही अनोखे लाल जी का प्रिय मानसिक खेल बन गया था।

श्यामलाल जी उच्च-पद पर आसीन एक मत्वाकांक्षी व्यवसायी थे। धन से धन की उत्पत्ति की इच्छा में इतने व्यस्त थे कि उनके लिए उस धन के प्रमुख कारक अपने पिता के लिए ही समय नहीं था। पत्नी और बच्चों को भी समय, स्नेह और दुलार के स्थान पर धन से ही संतुष्ट रखते थे। नतीजा यह था कि पत्नी और पुत्र भी पारिवारिक बंधनों से विमुख अपने-अपने दिनचर्या में व्यस्त रहते। बड़ी सी कोठी का अधिकांशतः भाग रिक्त ही रहता था तथा दो-चार नौकरों की चहल-पहल न हो तो वीरान सा प्रतीत होता। प्रारंभ में ऐसा नहीं था श्यामलाल जी जब विद्यार्थी थे उनके पिता जी का तीन कमरों का छोटा सा घर हुआ करता था। खाने की दिनचर्या तो रसोई घर में ही सम्पन्न होती थी। माँ सस्नेह फुलके बनाती थी और श्यामलाल जी की थाली में परोसती थी। माँ के सानिध्य में अक्सर एक-दो फुलके अधिक ही खा लिए जाते थे। अब तो खाने का समय ही नहीं रहता। सुबह के समय नाश्ता एक औपचारिकता मात्र बनकर रह गया थी। अख़बार के पन्नों पर नज़र टिकाए दो-तीन निवाले निगले जाते थे। परिवार के सदस्यों से भी मुलाक़ात, मुलाक़ातियों की तरह ही होती थी। इस जीर्ण पारिवारिक व्यवस्था में बैंक-बैलेंस को छोड़कर अन्य सारे भाव रिक्त हो रहे थे, जब तक पिताजी ने अवकाश ग्रहण नहीं किया था। यह व्यवस्था बेईमान होकर भी सुचारू रूप से चल रही थी किंतु अवकाश ग्रहण के पश्चात् पिता जी इस व्यवस्था के प्रति रोष प्रकट करते रहते थे एवं अपनी पत्नी और पुत्र को इस कुव्यवस्था का ज़िम्मेदार मानते थे, जबकि श्यामलाल जी को अच्छी तरह याद है कि अपने कमाई के दिनों में पिताजी ने भी परिवार की वैसी ही उपेक्षा की थी जैसे कि आज श्यामलाल जी कर रहे हैं। उन्हें याद है कि माता जी की तबियत ख़राब हो जाने के बावजूद पिता जी देर-सबेर ही घर लौटते थे और यहाँ तक कि आखिरी क्षणों में माता जी को गंगाजल भाड़े पर लाई गई परिचारिका के हाथों ही प्राप्त हुआ था। आज एकांकी होने के कारण पिताजी को यह सब बुरा लगता

था, पर धन-अर्जन, अनुशासन, परिश्रम और महत्वकांक्षा का प्रथम पाठ भी पिताजी ने ही सिखाया था। श्यामलाल जी तो स्नातक होकर शिक्षक की नौकरी करना चाहते थे, लेकिन स्टेट्स के शौकीन पिताजी ने उन्हें एम.बी.ए. कराया तथा एक बड़ी कम्पनी की एजेंसी दिलाई।

सविता देवी को याद है कि जब वह ब्याह कर आई थी तो मातृत्व स्नेह द्वारा उनकी सास ने उन्हें इतनी खुशी दी थी कि वह अपना मायका भूल गई। घर में चहल-पहल, खुशियाँ और छोटा सा परिवार था। छोटी-छोटी ज़रूरतें थीं और उन ज़रूरतों के लिए सब कुछ उपलब्ध था। पुत्र जन्म के पश्चात्, पति पढ़-लिखकर पहले कम्पनी का मुलाजिम बने और बाद में अपनी ही कंपनी खोल ली। धनागमन के साथ ही ज़रूरतें बढ़ने लगीं। अब तो हाल यह है कि शयन-कक्ष में भी वह बिस्तर पर होती और पति किसी फाईल में मग्न। बातचीत और हालचाल तो मुश्किल से ही हो पाता। फिर सास कि मुक्ति के पश्चात् बड़ी कोठी बन गई, रहने वाले कम पर आशियाना बड़ा हो गया। मकान था या वैभव और विलासिता का प्रदर्शन, पता नहीं।

आज अनोखेलाल की तबियत ख़राब हुए तीन दिन हो गए थे। एक चिकित्सक नियमित रूप से आकर जांच करता और दवाईयाँ देकर जाता, लेकिन दवाई देने और उसे खाने का आग्रह करने वाला कोई नहीं था। सुबह से ही वे अनमने हो गए थे। पुत्र धनश्याम अपने व्यवसाय और पौत्र क्रिकेट में व्यस्त थे। बहू किसी किट्टी पार्टी में गई हुई थी। प्रभावी स्वामियों की अनुपस्थिति में नौकर-चाकर भी इधर-उधर गए हुए थे। एक गिलास पानी या चाय पूछने वाला कोई नहीं था। आज उन्हें अपने वह छोटा सा घर याद आ रहा था। जब भी वह दफ़्तर से आते थे, बेटा जल लेकर व पत्नी चाय लेकर स्वागत करती थी। मिलकर शाम का नाश्ता होता था। प्रायः कहीं घूमने-फिरने का कार्यक्रम बनता था। जीवन कितना सुचारू था, लुभावना था। लेकिन किसे दोष दिया जाए। बचपन की कमियों को पूरा करने की होड़ में स्वयं धन को इतना महत्व दिया कि धन तो आ गया, पर उस धन के उपभोग का समय ही चला गया। आज लक्ष्मी की कृपा तो बरस रही है पर घर का चैन और सुकून ही समाप्त हो गया। पुत्र के पास, पिता के लिए समय नहीं है। ख़ैर इतनी देर में बहू वापस आ गई। अनोखे लाल जी ने कराहते हुए उसे बुलाया। बहू आकर खड़ी हो गई। बेटी! एक गिलास पानी देने वाला कोई नहीं है, दवाएँ भी जस की तस पड़ी हैं मेरे में इतनी हिम्मत नहीं कि अपना कार्य स्वयं करूँ। थोड़ा समय मेरे लिए भी निकाल लिया करो। याद है जब तुम नई-नई आयी थीं, तो हमेशा ताज़ा खाना परोसा करती थी और मैं भी बड़े चाव से खाया करता था। पिताजी मुझे सब याद है, अम्मा जी के समय परिवार कितना मजबूत और संतुलित था आपकी जिद्द ने हमारे लिए भौतिक सुविधाओं की भरमार तो लगा दी और प्रेम-रस इन भौतिकताओं में शुष्क होता गया। मैं चाहती हूँ कि इस समय आपकी सेवा करूँ परंतु खुद के द्वारा फैलाया गया सामाजिक सरोकार इतना अधिक हो गया है कि मुझे इच्छाएँ मारनी पड़ती हैं, मैं अभी पानी लेकर आती हूँ।

अनोखे लाल जी अपने जीवन-यात्रा के हर पल को याद कर रहे थे। बचपन में अभाव के कारण धन महत्वपूर्ण लगता था और आज अपने लोगों की उपेक्षा के कारण धन से अधिक रिश्तों की इच्छा होती है। इच्छाओं का कोई अंत नहीं होता यही सोचते-सोचते उनके सामने अचानक उनकी स्वर्गीय पत्नी खड़ी हो गई। उन्होंने अपने हाथों, अपनी सुचारु गृहस्थी को अपनी तृष्णा की वेदी पर नष्ट कर दिया। थोड़ा कम ही होता पर साथ तो होता। उस दिन मैं मरी थी, तुम्हारी बाट जोहते-जोहते, आज तुम मर रहे हो अपनों की बांट जोहते-जोहते। काश! आपने, अपने आप को अधूरा नहीं समझा होता तो शायद जीवन ज़्यादा खुशहाल होता।

चिर निद्रा में अनोखे लाल जी की आँखें अपने पुत्र धनश्याम, बहू सविता देवी और पौत्र की बाट जोहते-जोहते सूनी हो गईं। उनकी आँखें आख़िरी क्षणों में उपसंहार पर नज़र गड़ाए हुए थीं कि जीवन का कौन सा पन्ना कोरा रह गया और भाव की सरिता सूख गई। बहू पानी लेकर पहुँची लेकिन अनोखेलाल जी, आधुनिक भारतीय परिवारों से नदारद हो चुके सांस्कृतिक मूल्यों की भांति कहीं खो गए थे।

- आंचलिक कार्यालय, भोपाल

आंचलिक कार्यालय जालंधर को 'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति' द्वारा राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार

गृह-मंत्रालय राजभाषा विभाग के उप निदेशक श्री शैलेश कुमार सिंह के कर-कमलों द्वारा पुरस्कार ग्रहण करते हुए कार्यालय प्रमुख श्री हरविन्द्र सिंह (उप महाप्रबंधक) व सुश्री हिना (राजभाषा अधिकारी)

नराकास (बैंक) जालंधर की छमाही बैठक के अवसर पर श्री शैलेश कुमार सिंह और कार्यालय प्रमुख श्री हरविन्द्र सिंह अंतर्बैंक प्रतियोगिता में विजेता को पुरस्कार प्रदान करते हुए।

अंतर्बैंक प्रतियोगिता में विजेता सहभागी पुरस्कार प्राप्त करते हुए

'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति' द्वारा शाखा पानीपत को राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन हेतु द्वितीय पुरस्कार।

प्रशस्ति पत्र

हिंदी कार्यशालाएँ

आंचलिक कार्यालय गुवाहाटी।

आंचलिक कार्यालय जालंधर।

आंचलिक कार्यालय अमृतसर।

आंचलिक कार्यालय लुधियाना

आंचलिक कार्यालय, भोपाल

आंचलिक कार्यालय दिल्ली-।, नई दिल्ली।

हिंदी कार्यशालाएँ

आंचलिक कार्यालय गुरदासपुर।

आंचलिक कार्यालय हरियाणा।

आंचलिक कार्यालय, जालंधर

आंचलिक कार्यालय चण्डीगढ़।

आंचलिक कार्यालय लखनऊ।

आंचलिक कार्यालय चण्डीगढ़।

हिंदी कार्यशालाएँ

आंचलिक कार्यालय कोलकाता।

आंचलिक कार्यालय दिल्ली-।।।

आंचलिक कार्यालय, जालंधर

आंचलिक कार्यालय, पटियाला।

आंचलिक कार्यालय, मुम्बई।

आंचलिक कार्यालय दिल्ली-।।, नई दिल्ली।

आंचलिक कार्यालय अमृतसर।

मासूम चेहरा

रणधीर सिंह कोमल

गोलू की उम्र केवल आठ वर्ष की थी, जब उसके पिता की मृत्यु शराब पीने के कारण हो गई थी। गोलू के घर में उसकी विधवा माँ और एक चार महीने का उसका नन्हा भाई था, जो केवल अपनी माँ का दूध ही पीता था क्योंकि घर में ग़रीबी के कारण बाहर से दूध खरीदने की हिम्मत नहीं थी। इसी कारण परिवार को कई बार भूखे पेट ही सोना पड़ता था। गोलू बहुत ही समझदार तथा होनहार बच्चा था। वह प्रतिदिन मेहनत-मज़दूरी कर के घर की रोटी चलाने की तरकीबें सोचता रहता था। इतनी छोटी उम्र में भी हमेशा उसका दिमाग घर के हालात सुधारने की उधेड़-बुन में ही लगा रहता था। वह हर समय अपनी माँ को तसल्ली देता - 'कि माँ तू चिन्ता मत कर, मैं बड़ा होकर मेहनत करके खूब पैसे कमा कर घर की ग़रीबी को दूर कर दूंगा।"

गोलू बेचारा करे भी क्या?देश में बाल-मज़दूरी एक्ट के लागू होने के कारण इस छोटी सी उम्र में उसे कोई भी काम पर रखने को तैयार नहीं था। एक दिन घर में आटा-दाल कुछ भी नहीं था। कल रात से ही उसकी माँ और वह भूखे पेट बैठे थे। आज दोपहर होने वाली थी कभी गोलू अपनी माँ की तरफ देखता और कभी माँ गोलू की तरफ। दूसरी तरफ गोलू का छोटा भाई ज़ोर-ज़ोर से अपनी टांगे मार-मार के बड़ी ज़ोर से रो रहा था क्योंकि भूखी प्यासी माँ के स्तनो में से दूध की एक बूंद भी नहीं निकल रही थी। बेचारी माँ जिसकी हड्डियाँ निकली हुई थी, रंग पीला पड़ चुका था, अपने बच्चे को भूखा देख कर तड़प रही थी। समाज में एक तरफ लोग बहुत ही अमीर और दूसरी ओर लाचारी और ग़रीबी के कारण पेट भर रोटी की दरकार।

आखिर गोलू के दिमाग में यह बात आई कि आज कल बैसाख के महीने में किसान खेतों मे से गेहूँ काट रहे हैं, मैं क्यों न उनकी गेहूँ की बल्लियां जो काटते समय नीचे गिर जाती हैं उन्हें इकट्ठा करके उनमें से गेहूँ निकाल कर उसका आटा पिसवा लूँ, जिससे हम लोग पेट भर रोटी खा सकेंगे। यह सोच कर गोलू एक लम्बा सा थैला लेकर खेतों की तरफ चल दिया। जैसे ही खेत में उसे गेहूँ की गिरी हुई बल्ली दिखाई देती, वह जल्दी से उसे उठा कर अपने थैले में डाल लेता और बहुत खुश होता कि अब हमें रोटी खाने को मिलेगी। दोपहर का एक बज चुका था, गोलू का थैला गेहूँ की बल्लियों से ऊपर तक भर चुका था। अब गोलू के चेहरे पर बड़ी रौनक दिखाई दे रही थी, कि आज मैंने खाने का प्रबंध कर लिया है। भयंकर गर्मी के कारण गोलू पसीने से भीग गया था, जैसे किसी ने उसके ऊपर बाल्टी भर कर पानी डाल दिया हो। पर फिर भी मन प्रसन्नचित था, क्योंकि पेट भरने की आशा पूरी हो चली थी। गोलू की आँखों के सामने बार-बार उसकी भूखी-प्यासी माँ और छोटे भाई का चेहरा आ रहा था और वह सोच रहा था कि मैं जल्दी-जल्दी घर जा कर माँ को दिखाऊँ कितनी खुश होगी। खेतों में गोलू और इतना लम्बा और भारी थैला, जिसमें ऊपर तक गेहूँ की बल्लियां भरी हुई थी। वह उसे बड़ी मुश्किल से घसीटता हुआ किसी तरह खेतों से बाहर ले आया।

गोलू ने बल्लियों को सड़क के बीचों-बीच ढेरी कर दिया और खुद सड़क के किनारे खड़ा हो कर आती-जाती गाड़ियों को बल्लियों के ढेर के ऊपर से गुज़रते हुए देख कर खुशी से तालियाँ मार कर नाचने लगता, क्योंकि उसे बल्लियों में से गेहूँ निकलती देख कर बड़ा मज़ा आ रहा था। गोलू को अहसास हो रहा था कि आज वह गेहूँ पिसवा कर हम पेट भर रोटी खायेंगे। दिन के पाँच बज चुके थे, दोपहर की धूप भी अब ढल रही थी, उधर गोलू का पसीना भी सूख गया था। लगभग इसी समय हमारी भी बैंक से छुट्टी हो जाती थी। उस दिन मैं अपने सहयोगी की मोटर साइकिल के पीछे बैठ कर अपने घर जा रहा था। मैं दूर से आगे की ओर देख रहा था कि रास्ते में सड़क पर गोलू ने अपनी गेहूँ की बालियों का ढेर लगा रखा है और उसके ऊपर से गाड़ियाँ गुज़र रही थी। सड़क के किनारे खड़ा गोलू बहुत खुश दिखाई दे रहा था। मेरा साथी बड़े आराम से मोटर साइकिल चला रहा था। हमारे मोटर साइकिल को आते देख कर उसकी खुशी और बढ़ गई कि अब मोटर साइकिल गेहूँ की बालियों के ऊपर से गुज़रेगा तो कुछ और गेहूँ निकल जाएगी। परंतु मेरा साथी, गेहूँ की बल्लियों के ढ़ेर को बचाता हुआ, सड़क के किनारे से हो कर निकल गया। मैं मोटर साइकिल पर बैठा पीछे मुड़ कर देखने लगा। मैंने देखा, गोलू का हँसता हुआ चेहरा एक दम उदासी में बदल गया, मानो उसका मायूस चेहरा हमसे शिकायत कर रहा हो, कि अगर आप अपना मोटर साइकिल गेहूँ की बल्लियों के ढेर के ऊपर से निकाल लेते तो आप का क्या घट जाता?इसमें से कुछ और गेहूँ निकल जाती। आज भी जब वो मायूस चेहरा मुझे याद आता है तो मेरी आँखों में से आँसू आ जाते हैं। सोचता हूँ कि हमारे देश में अभी भी कितनी ग़रीबी है एक ओर लोग रात को भूखे पेट सो जाते हैं और दूसरी ओर देश के भंडारों में अनाज सड़ रहा है। अगर यह अनाज समय रहते ग़रीबों में बांट दिया जाए तो शायद कोई ग़रीब रात को भूखे पेट नहीं सोयेगा।

- शाखा बडाली अला सिंह

ज़िला फतेहगढ़ साहिब (पंजाब)

साध-संगत की मर्यादा

मक्खन सिंह

साध संगत की कुछ आदर्श परम्पराएं हैं जो सिख गुरूओं की शिक्षा पर आधारित हैं, जिस कारण विश्व भर में एकत्र हो रही संगत विधि और विधान को आधार बना कर अलग-अलग स्थानों पर अपना कार्य कर रही हैं और श्री गुरु नानक देव जी के आदर्शों का प्रचार व प्रसार कर रही हैं। वही स्थान साध संगत है जहाँ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश होता है। 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' जी को जो सत्कार मिलता है वो भी विशेष विधि-विधान से सम्पन्न होता है और उसी तरीके से श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी से नेतृत्व प्राप्त किया जाता है। ऐसा तरीका किसी ओर धर्म में प्रचलित नहीं है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी से जो नेतृत्व लिया जाता है वो भी अपने आप में निराला है। हाज़रा हजूर गुरु ग्रंथ साहिब जी की ताबिया में हजूरी सिख या ग्रंथी साहिब की स्थापना चौर के साथ करता है। यहाँ पर एकत्रित संगत अपने आप को गुरु के सम्मुख होकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सामने अपने आप को समर्पित कर देती है। ऐसी एकत्रित संगत निराली और उत्तम हो जाती है जिसमें प्रभु विराजमान व हाज़िर समझा जाता है। संगत में आने वाला हर व्यक्ति इस को सचखंड समझकर अपने अवगुणों का त्याग करता है और सद्बुद्धि प्राप्ति के लिए तैयार होता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के प्रकाश के उपरांत कीर्तन भी निश्चित सिख विधि-विधान अनुसार होता है। यह कीर्तन श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में शामिल हुई गुरुवाणी का ही होता है। भाई गुरदास, भाई नन्दलाल जी की वाणी व गुरु गोबिन्द सिंह जी की मंज़ूर रचना को ही गाया जा सकता है।

कथा व व्याख्या केवल गुरुवाणी के शबद के अनुसार ही हो सकती है। शबद की व्याख्या करते हुए और शब्दों के और ऐतिहासिक घटनाओं का उदाहरण दिया जा सकता है पर सदैव याद रखने वाली बात यह है कि व्याख्या व उदाहरण गुरमत सिद्धान्त के विपरीत न हो, इसकी ज़िम्मेवारी प्रवक्ता, व्याख्याकार व प्रबंधक की होती है। प्रोग्राम की समाप्ति पर आनन्द साहिब जी के छः पदों का पाठ परम्परानुसार होता है। इस पाठ से पहले कड़ाह प्रसाद की देग तैयार करवा कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के हजूर में पहुँचनी ज़रूरी है। याद रखने वाली बात यह है कि कड़ाह प्रसाद तैयार करने के लिए और प्रसाद संगत में बाँटने के लिए भी विधि/तरीका निश्चित है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश ऊँचे ख़ास स्थान पर होना ज़रूरी है। संगत के बैठने के लिए एक जैसी साफ़-सुथरी जगह निश्चित की जाती है। संगत में बैठने से पहले बाहर हाथ पाँव धो कर तथा सिर ढक कर संगत में बैठते हैं। इस निश्चित की गई मर्यादा को सभी संगत ने तो मानना ही है, ग़ैर सिख भी इस मर्यादा को स्व इच्छा से अमल करते हैं।

जब इंग्लैंड के राज अधिकारी प्रिंस ऑफ वेलस ने श्री हरमंदिर साहिब अमृतसर में आने का प्रोग्राम बनाया था तो शाही महलों में भी उनको माथा टेकने की विधि तथा संगत में जाने के लिए पूरी जानकारी तथा ट्रेनिंग दी गई। संगत में बैठे हर व्यक्ति को बिना किसी जाति, कौम, धर्म व देश के भेदभाव के एक ही समान दर्जा दिया जाता है। हर व्यक्ति को हरि का रूप जानकर बराबर का दर्जा दिया जाता है। जब मुगल बादशाह अकबर गोबिन्दवाल में श्री गुरु अमरदास जी के दर्शनों के लिए आया तो उसने भी 'पहले पंगत पाछे संगत' की निश्चित मर्यादा को निभाया फिर गुरु साहिब जी के दर्शन किए, क्योंकि संगत में आने वाला कोई भी बड़ा या छोटा नहीं होता।

लंगर की प्रथा सिखी के मूल सिद्धांतों पर आधारित है। एक जगह पर एक ही सामान सभी संगतों को बिना किसी भेद-भाव के लंगर (गुरु प्रसाद) वितरित किया जाता है तथा इस स्थान पर राजा हो या रंक दोनों एक साथ बैठ के लंगर छकते (खाते) हैं।

संगत एक ऐसी संस्था है जो कि संगत के लिए एकत्रित हुए लोगों की समस्याओं का निदान करती हैं। यहाँ से कोई मजबूर व्यक्ति खाली हाथ नहीं जाता, उनके लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के सम्मुख होकर प्रार्थना/अरदास की जाती है और श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी के विधि-विधानों के अनुसार उसकी वित्तीय सहायता भी की जाती है। दूर-दराज से आने वाली संगतों के लिए विधि अनुसार रहने के लिए सराय व भोजन के लिए लंगर तथा बीमार व कमज़ोर वर्ग की संगत तथा समाज के हर कौम को बिना भेद-भाव के चिकित्सालय/डिस्पेंसरी का इंतज़ाम होता है यह सब कुछ सिख धर्म के अनुसार होता है।

कुछ गुरुद्वारों में संगतों ने समयानुसार निःशुल्क लैब की सुविधा देना भी आरम्भ कर दिया है।

संगत समागम की समाप्ति पर जो अरदास करती है वो भी निश्चित शबदों के अनुसार होती है, अरदास में जहाँ वाहेगुरु का शुकराना किया जाता है वहाँ पर सारा सिख इतिहास भी दोहराया जाता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के सम्मुख प्रार्थना की जाती है कि श्रद्धालुओं का "मन नीवां ते मत ऊँची" रहे। अंत में "जहाँ-जहाँ ख़ालसा जी साहिब, तहाँ तहाँ रछिया (रक्षा) रियायत" की प्रार्थना करके 'सरवत के भले' की कामना की जाती है।

नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत का भला।

इस सारी विधि का आधार श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की वाणी है। जिस महान ग्रंथ में 36 महापुरुषों की वाणी दर्ज है जिसमें 6 गुरु साहिबान, 15 भक्त, 11 भट्ट एवं 4 सिखों की वाणी शामिल है। हमारे देश को यह गर्व हासिल है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब को विश्व स्तर पर सम्मान मिला है।

- सेवानिवृत्त, उप महाप्रबंधक

- उठो, जागो और तब तक रुको नहीं जब तक मंज़िल प्राप्त न हो जाए।
- सत्य है, उसे साहसपूर्वक निर्भीक होकर लोगों से कहो-उससे किसी को कष्ट होता है या नहीं, इस ओर ध्यान मत दो। दुर्बलता को कभी प्रश्रय मत दो। सत्य की ज्योति 'बुद्धिमान' मनुष्यों के लिए यदि अत्यधिक मात्रा में प्रखर प्रतीत होती है और उन्हें बहा ले जाती है, तो ले जाने दो-वे जितना शीघ्र बह जाएँ उतना ही अच्छा है। तुम अपनी अंतःस्थ आत्मा को छोड़ किसी और के सामने सिर मत झुकाओ।
- जब तक तुम यह अनुभव नहीं करते कि तुम स्वयं देवों के देव हो, तब तक तुम मुक्त नहीं हो सकते।
- ईश्वर ही ईश्वर की उपलब्धि कर सकता है। सभी जीवंत ईश्वर हैं
- इस भाव से सबको देखो। मनुष्य का अध्ययन करो, मनुष्य ही जीवंत काव्य है। जगत में जितने ईसा या बुद्ध हुए हैं, सभी हमारी ज्योति से ज्योतिष्मान हैं। इस ज्योति को छोड़ देने पर ये सब हमारे लिए और अधिक जीवित नहीं रह सकेंगे, मर जाएँगे। तुम अपनी आत्मा के ऊपर स्थिर रहो। ज्ञान स्वयमेव वर्तमान है, मनुष्य केवल उसका आविष्कार करता है।
- मानव-देह ही सर्वश्रेष्ठ देह है, एवं मनुष्य ही सर्वोच्च प्राणी है, क्योंकि इस मानव-देह तथा इस जन्म में ही हम इस सापेक्षिक जगत् से संपूर्णतया बाहर हो सकते हैं - निश्चय ही मुक्ति की अवस्था प्राप्त कर सकते हैं और यह मुक्ति ही हमारा चरम लक्ष्य है।
- जो मनुष्य इसी जन्म में मुक्ति प्राप्त करना चाहता है, उसे एक ही जन्म में हज़ारों वर्ष का काम करना पड़ेगा। वह जिस युग में जन्मा है, उससे उसे बहुत आगे जाना पड़ेगा, किन्तु साधारण लोग किसी तरह रेंगते-रेंगते ही आगे बढ़ सकते हैं। जो महापुरुष प्रचार-कार्य के लिए अपना जीवन समर्पित कर देते हैं, वे उन महापुरुषों की तुलना में अपेक्षाकृत अपूर्ण हैं, जो मौन रहकर पवित्र जीवनयापन करते हैं और श्रेष्ठ विचारों का चिंतन करते हुए जगत् की सहायता करते हैं। इन सभी महापुरुषों में एक के बाद दूसरे का आविर्भाव होता है - अंत में उनकी शक्ति का चरम फलस्वरूप ऐसा कोई शक्ति सम्पन्न पुरुष आविर्भूत होता है, जो जगत् को शिक्षा प्रदान करता है।

- स्वामी विवेकानंद

काव्य-मंजूषा

चल कहीं दूर चलें...

- प्रद्युम्न

चल कहीं दूर चलें...
जहाँ कोई न हो तेरे मेरे सिवा,
ना तू मुझसे हो दूर, ना मैं तुझसे जुदा।
कुछ ख़ामोशी हो, कुछ बातें हों,
बातों में गुज़रती कुछ रातें हों।
चल कहीं दूर चलें...।

जहाँ रंग बिखरे हों फ़िज़ाओं में,
तेरे साँसों की खुशबू हो हवाओं में।
जहाँ प्यार बरसाते बादल हों,
और उसमें भीगता सा तेरा आंचल हो।
चल कहीं दूर चलें...।

जहाँ तेरे साए से लिपटा रहे मेरा साया
न पास अपना हो कोई, न हो कोई पराया।
तेरे कुछ शिकवे..., मेरी कुछ शिकायतें हों
कुछ मनमानियाँ, कुछ हिदायतें हों।
चल कहीं दूर चलें...।

जहाँ जिधर भी देखूं, बस तू ही दिखाई दे
जो भी सूनुं, बस तेरी ही आवाज़ सुनाई दे।
थोड़ी आस हो... थोड़ी प्यास हो,
सिर्फ़ तू ही तू मेरे पास हो।
चल कहीं दूर चलें...।

- शाखा समालखा (पानीपत)

गंतव्य की ओर

- सरबजीत सिंह डंग

हे मानव चल तू गंतव्य की ओर,
पकड़ के वक़्त के दामन की छोर,
छू ले ऊँचाइयों को लिए हाथ में कर्म-डोर,
हे मानव चल! तू गंतव्य की ओर....।

माना कि मुश्किलें पग-पग पर हैं,
आसान नहीं होती कोई भी डगर है,
हौंसलें बुलंद हैं तो सब कुछ आसाँ है,
दिल है जवाँ तो हर राह फिर वहाँ है,
निश्चय हो मन में तो मिल जाता है ठौर,
हे मानव चल! तू गंतव्य की ओर....।

मन जीत ले ग़र तू जीत सकता है,
ठान ले अगर कोई, कुछ रुकता नहीं है वहाँ,
बदल लेती है मौत भी रास्ता,
होता है जहाँ 'सरब' संकल्प का ज़ोर,
हे मानव चल! तू गंतव्य की ओर,
पकड़ के वक़्त के दामन का छोर।

- शाखा न्यू मार्किट, जागाधरी

रिश्ते

- एस. एस. बिन्द्रा

इश्क़ की राह पर चलते-चलते,
जाने दिल घबराये क्यों?
वफ़ा के बदले वफ़ा मिले,
ये बात समझ न पाये क्यों?

शमा में वो चमक नहीं है,
लगती है कुछ बुझी-बुझी सी,
परवाना भी सोच रहा है,
मुफ़्त में जान गवायें क्यों?

बेबस माली पूछ रहा है,
जाती हुई बहारों से,
तोड़ के यूँ दिल जाना था तो,
इस गुलशन में आये क्यों?

जिसकी ख़ातिर छोड़ दिया है,
हमने सारी दुनिया को,
वो ही पाकर हमें सामने,
जाने नज़र चुराये क्यों?

कल तक जो अपने लगते थे,
आज लगे बेगाने से,
रिश्तों की ये भूल-भुल्लैयाँ,
मुझको समझ न आये क्यों?

- सेवा निवृत, वरिष्ठ प्रबंधक

चिंगारी

- परविन्दर कौर

मुक्त कर दो
इंसानियत की पीढ़ियों को,
काट डालो
दासता की बेड़ियों को,
बादलों की टुकड़ियाँ
चाहे घनी हों
धूप का नन्हा सा
टुकड़ा ही बहुत है।
सघनतम अंधेरे के गर्भ में,
नन्हा सा इक दिया
ही बहुत है।
हाथ में ले करके,
उसी नन्ही शमां को
दूर तक के रास्ते बन जायेंगे।
एक नन्ही सी
चिंगारी राख कर दे,
हाथ में जलती मशाल
कम नहीं है
शर्त ये है कि
उठानी है तुम्हीं को
एक से दूजी
जलानी है तुम्हीं को,
कुछ क्षणों में
शहर ही जल जायेंगे
रास्ते खुद-ब-खुद
बन जायेंगे।

प्र.का., सामान्य प्रशासन विभाग
नई दिल्ली

तो देश आगे कैसे बढ़े ?

- प्रतीक गोयल

जब हिंदी और संस्कृत का घटता जाए ज्ञान,
और सिर्फ अंग्रेज़ी को ही मिले सम्मान,
तो देश आगे कैसे बढ़े ?

जब स्वदेशी उत्पाद की माँग घटने लगे,
और विदेशी ही ख़ास लगे,
तो देश आगे कैसे बढ़े ?

जब मॉल में दें मुँह मांगे दाम,
और महंगे लगें ठेले वाले आम,
तो देश आगे कैसे बढ़े ?

जब मुन्ना, देशी खाना न खावे,
और पिज्जा, बर्गर ही मन भावे,
तो देश आगे कैसे बढ़े ?

जब विदेश में नौकरी लगे प्यारी,
और युवा ही न ले देश की ज़िम्मेदारी,
तो देश आगे कैसे बढ़े ?

जब वेद, उपनिषद् का न हो कोई बोध,
और ब्रिटेन में ही सारे शोध,
तो देश आगे कैसे बढ़े ?

जब ठग बैठें हो बनकर सारे संत,
और भ्रष्टाचार का नहीं हो कोई अंत,
तो देश आगे कैसे बढ़े ?

जब मदद करने के लिए नही हो वक़्त,
और विलुप्त होता जाए देश भक्त,
तो देश आगे कैसे बढ़े ?

- शाखा बहादुरगढ़ (हरियाणा)

नन्हे चित्रकार

निशांत भदौरिया
सुपुत्र श्री सुरेश कुमार भदौरिया
प्र.का., सामान्य प्रशासन विभाग,
नई दिल्ली।

मेघा पाठक
(भतीजी) डॉ. नीरू पाठक
प्र.का., राजभाषा विभाग,
नई दिल्ली।

नेहा भदौरिया
सुपुत्र श्री सुरेश कुमार भदौरिया
प्र.का., सामान्य प्रशासन विभाग,
नई दिल्ली।

गुरलीन कौर
(भतीजी) सुश्री परविन्दर कौर
प्र.का. सामान्य प्रशासन विभाग, नई दिल्ली।

गुरलीन कौर
सुपुत्री श्री एन. एस. आनंद,
महाप्रबंधक आई.टी. (सचिवालय), नई दिल्ली।

हमारे चित्रकार

श्रीमती शौन्तल सिंह
प्र०का० जोखिम प्रबंधन विभाग
नई दिल्ली

श्रद्धा सुमन

साथी जो हमसे बिछुड़ गए

मुख्य प्रबंधक

श्री दिवाकर कंसल, कीर्ति नगर, नई दिल्ली
श्री हरसरन सिंह आहूजा, गुज़रावाला टाउन, दिल्ली

वरिष्ठ प्रबंधक

श्री सुजान सिंह, गुनियाना मंडी

प्रबंधक

श्री भुपिन्दर सिंह सहगल, चांदनी चौक, दिल्ली
श्री प्रभु दयाल, भटिंडा
श्री ज्ञान चंद, नवां शहर
श्री जय किशन, दशमेश खालसा कॉलेज, मुक्तसर
श्री जसबीर सिंह, गवर्मेंट पॉलिटेकनीक, पटियाला
श्री प्रमोद कुमार, गुडगाँव

अधिकारी

श्री दल सिंगार रावत, मिर्ज़ापुर
श्री अजब सिंह, अलीगढ़
श्री अजय प्रकाश श्रीवास्तव, कानपुर
श्री निर्मल सिंह खीमा, लाड बंजारा कला, पटियाला
श्री सर्वजीत कुमार लूथरा, नई दिल्ली
श्री हरिन्दर सिंह लाम्बा, मेरठ कैंट
श्रीमती शिवजिंदर कौर, अहमदाबाद
श्री बी. डी. जोशी, हल्द्वानी
श्री सुरिन्दर कुमार धीर, कोट ईसा खान
श्री सुरेश कुमार गहलोत, वैशाली नगर, जयपुर

क्लर्क

श्री राजपाल रमन, मुंबई
श्री लखमिंदर सिंह, मल्का गंज
श्री दीपक सदानंद सेठी, खार, मुंबई
श्री सुशील कुमार, पुराना किला, नई दिल्ली

अधीनस्थ कर्मचारी

श्री राजिंदर सिंह, आसिफ़ अली रोड़, नई दिल्ली
श्री सुरिंदर सिंह, रोशनपुरा, दिल्ली
श्री एस. पुरुषोत्तमन, अड्यार, चेन्नई
श्री जोगिंदर सिंह चीमा, पिपरिया धानी
श्री भूपिंदर सिंह, चनालों
श्री सी. पानेर सेलवम, माऊंट रोड, चैन्नै
श्री लोक हरि भंडारी, लोनी बॉर्डर
श्री दया नंद, न्यू फ्रेंडस कॉलोनी
श्री गोपाल सिंह, बटाला
श्री बलविंदर सिंह, बरियार
श्री सतपाल, कोट मंगल सिंह, अमृतसर

पी.टी.एस.

श्री आज़ाद सिंह, आर.एस.टी.सी., चंडीगढ़
श्री ओमपती, अंधेरी, मुंबई
श्री राजू, सिविल लाइंस, अमृतसर
श्री भगवान जी परमार, जाम नगर
श्रीमती परमजीत कौर, हैडों
श्रीमती स्वर्ण कौर, शेरों

भारतीय रिज़र्व बैंक, कृषि बैंकिंग महाविद्यालय द्वारा आयोजित बैंक तथा संस्थानों के अर्थ शास्त्रियों के दो दिवसीय (फरवरी 13-14, 2014) सम्मेलन में भारतीय रिज़र्व बैंक के उच्चाधिकारियों के साथ हमारे बैंक के कार्यकारी निदेशक श्री मुकेश कुमार जैन एवं महाप्रबंधक श्री आर. सी. नारायण परिलक्षित हैं।